बिहार-झारखंड संस्करण
वर्ष: 5
अंक: 159
मूल्य ₹ 2.00
पृष्ठ 06
Reg: UDYAM-BR-17-0007168

दैनिक बिहार पत्रिका

सच के साथ

दैनिक बिहार पत्रिका DAINIK BIHAR PATRIKA

पटना। सोमवार, 06 जनवरी 2025 | सम्पादकः कृष्णा टेकड़ीवाल | web_dainikbiharpatrika.com | Email_ dainikbiharpatrika@gmail.com

‘आप-दा’ से कम नहीं दिल्ली सरकार, भाजपा ही करेगी सपने साकार : पीएम मोदी

दैनिक बिहार पत्रिका

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले दिल्ली के रोहिणी स्थित जापानी पार्क में परिवर्तन रैली को संबोधित किया। इस दौरान पीएम मोदी ने उम्मीद जताई कि दिल्ली में इस बार कमल खिलेगा। प्रधानमंत्री मोदी ने दिल्ली की आम आदमी पार्टी सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा, “मैं दिल्लीवासियों से एक विशेष अनुरोध करना चाहता हूं। दिल्ली और आपके बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए मैं आपसे अनुरोध करने आया हूं कि आप भाजपा को एक अवसर प्रदान करें। ये भाजपा ही है जो दिल्ली का विकास कर सकती है।”उन्होंने आगे कहा, “बीते 10 साल में दिल्ली ने जिस तरह की राज्य सरकार देखी है, वो किसी ‘आप-दा’ से कम नहीं है। यह एहसास आज दिल्ली वालों को अच्छे से हो चुका है, इसलिए अब दिल्ली में एक ही आवाज गूंज रही है, ‘आप-दा’ नहीं सहेंगे, बदल के रहेंगे। अब दिल्ली विकास की धारा चाहती है और मुझे खुशी है कि दिल्ली का विश्वास भाजपा पर है। भाजपा पर ये विश्वास इसलिए है, क्योंकि भाजपा सुशासन लाने वाली पार्टी है। भाजपा सेवाभाव से काम करने वाली पार्टी है, भाजपा सपनों को पूरा करने वाली

पार्टी है।” पीएम मोदी ने परिवर्तन रैली को संबोधित करते हुए कहा, “हम 2025 में हैं। 21वीं सदी को 25 साल बीत चुके हैं यानी एक चौथाई सदी गुजर गई है। इस दौरान दिल्ली में नौजवानों की दो या तीन पीढ़ी जवान हो चुकी है। अब आने वाले 25 साल भारत के भविष्य के लिए, दिल्ली के भविष्य के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है।” उन्होंने आगे कहा, “ये 25 साल, भारत को विकसित राष्ट्र बनते हुए देखेंगे। हम उसके भागीदार होंगे। ये भारत को आधुनिकता के एक नए दौर से गुजरते हुए देखेंगे। विकसित भारत के इस सफर का एक बहुत बड़ा पड़ाव जल्द ही आने वाला है। जब भारत, दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक ताकत बनेगा।” पीएम मोदी जीत को लेकर आश्वस्त दिखे। कहा , “मुझे विश्वास है कि दिल्ली विधानसभा में भी कमल खिलने वाला है।

मैं दिल्ली भाजपा के सभी कर्मठ कार्यकर्ताओं से कहूंगा कि पूरी निष्ठा के साथ दिल्ली के हर कार्यकर्ता से मिलिए, उन्हें आने वाले वर्षों के लिए भाजपा के संकल्प से परिचित कराइए। ये भाजपा ही है, जो दिल्ली को, दुनिया की बेहतरीन राजधानी का गौरव दिला सकती है।” उन्होंने कहा, “पिछले साल केंद्र की भाजपा सरकार ने दिल्ली में सुरक्षा, स्वास्थ्य सेवा और विकास संबंधी पहलों के लिए 75,000 करोड़ रुपये से अधिक आवंटित किए थे। हमारा उद्देश्य दिल्ली को एक ऐसी राजधानी में बदलना है जो भारत की समृद्ध विरासत को दर्शाती हो और वैश्विक व्यवस्था के अनुरूप अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए एक केंद्र के रूप में भी काम करे। दिल्ली को शहरी विकास के ऐसे मॉडल की जरूरत है, जो बाकी दुनिया के लिए एक मिसाल कायम करे। यह तभी हासिल किया जा सकता है, जब भाजपा को राज्य और केंद्र दोनों पर शासन करने का मौका दिया जाए।”

उन्होंने कहा, “जिस आप-दा सरकार के पास दिल्ली के लिए कोई विजन न हो, जिसे दिल्ली की परवाह न हो, वह दिल्ली का विकास नहीं कर सकती है। दिल्ली को आधुनिक बनाने के लिए जितने भी काम हैं वो केंद्र की भाजपा सरकार ही कर रही है।”

संक्षिप्त समाचार

गुजरात के पोरबंदर हवाईअड्डे पर कोस्ट गार्ड का हेलीकॉप्टर क्रैश, राहत अभियान जारी

दैनिक बिहार पत्रिका

गुजरात के पोरबंदर हवाईअड्डे पर रविवार को बड़े हादसे में कोस्ट गार्ड का एक हेलीकॉप्टर क्रैश हो गया है। हेलीकॉप्टर के क्रैश होने के बाद उसमें आग लग गई, जिससे स्थिति और भी गंभीर हो गई। हादसे के बाद पुलिस और राहत कार्यों में जुटी टीम ने घटनास्थल पर पहुंचकर बचाव कार्य शुरू किया है। मिली जानकारी के अनुसार, इस दुर्घटना में तीन लोगों की मौत की आशंका जताई जा रही है। वहीं, कुछ लोग घायल भी हुए हैं जिन्हें नजदीकी अस्पताल में इलाज के लिए भेजा गया है। हेलीकॉप्टर क्रैश होने के पीछे क्या कारण है। अभी इस बारे में कोई जानकारी निकलकर सामने नहीं आई है। मामले की जांच की जाएगी। घटना स्थल पर दमकल विभाग और मेडिकल की टीम मौजूद है। बता दें कि गत वर्ष 4 नवंबर 2024 को भी भारतीय वायुसेना का एक मिग विमान क्रैश हो गया था। यह विमान दुर्घटना उत्तर प्रदेश के आगरा में हुई थी। दुर्घटना के दौरान पायलट सुरक्षित रूप से विमान से बाहर आ गया था। दुर्घटना के कारणों को लेकर जांच के आदेश दे दिए गए थे। गत वर्ष मिग-29 एयरक्राफ्ट के क्रैश होने का यह दूसरा मामला था। इससे पहले उसी वर्ष सितंबर में रूटीन फ्लाइंग के दौरान राजस्थान के बाड़मेर में मिग-29 में तकनीकी खराबी आ गई थी। इस तकनीकी खराबी के बाद विमान क्रैश हो गया था। 2 अक्टूबर 2024 को महाराष्ट्र के पुणे के पिंपरी चिंचवड शहर के बावधन बुद्रुक गांव के पास एक प्राइवेट हेलीकॉप्टर क्रैश हो गया था।

पाकिस्तान में बलूचिस्तान के तुरबत में विस्फोट, चार की मौत, 32 घायल

दैनिक बिहार पत्रिका

पाकिस्तान में बलूचिस्तान के तुरबत शहर में शनिवार को हुए विस्फोट में कम से कम चार लोगों की मौत हो गई, जबकि 32 अन्य घायल हो गए। इनमें से पांच की हालत गंभीर है। घायलों में एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी और उनके परिवार के छह सदस्य भी शामिल हैं। प्रतिबंधित बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) ने हमले की जिम्मेदारी ली है। पुलिस ने यह जानकारी दी। जियो न्यूज चैनल की खबर के अनुसार, हाथ लगे एक सीसीटीवी फुटेज में सड़क पर कई वाहन चल रहे हैं और अचानक हुए विस्फोट के बाद एक चलती यात्री बस में आग लग गई। पुलिस ने कहा कि वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (अपराध शाखा) जोहैब मोहसिन व उनके परिवार के छह सदस्य भी घायल हो गए। जब विस्फोट हुआ तब मोहसिन और उनका परिवार इलाके से गुजर रहा था। सुरक्षा बलों के मुताबिक, प्रतिबंधित आतंकी संगठन बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी ने हमले की जिम्मेदारी ली है। मृतकों की पहचान नूर खान, अब्दुल वहाब, इजाज और लियाकत अली के रूप में की गई है। चारों नागरिक बलूचिस्तान के अलग-अलग इलाकों के रहने वाले थे। सुरक्षा सूत्रों ने कहा कि बीएलए ने एक साल में 100 से अधिक निर्दोष बलूच नागरिकों की जान ली है।राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी ने विस्फोट में लोगों की मौत पर दुख व्यक्त करते हुए घटना की निंदा की। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने भी शोक व्यक्त किया है। सिंध के मुख्यमंत्री मुराद अली शाह ने तुरबत विस्फोट की कड़ी निंदा की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि निर्दोष लोगों को निशाना बनाना क्रूर और बर्बर कृत्य है। सिंध के गवर्नर कामरान टेसोरी ने भी तुरबत में हुए विस्फोट की निंदा करते हुए कहा कि आतंकवादी निर्दोष नागरिकों के जीवन के दुश्मन हैं।

अपराधियों ने घर में घुसकर युवक को मारी गोली, मौके पर ही मौत

दैनिक बिहार पत्रिका

समस्तीपुर। दलसिंहसराय थाना क्षेत्र के केवटा वार्ड संख्या 6 में अपराधियों ने एक युवक को घर में घुसकर गोली मार दी, जिससे युवक की मौत घटनास्थल पर ही हो गई। घटना के बाद परिजनों में चीत्कार मच गई और गोलियों की आवाज सुनने के बाद स्थानीय लोग एकत्रित हो गये। उसके बाद शव के साथ सड़क जाम कर अपराधियों को गिरफ्तार करने की मांग करने लगे। समाचार लिखे जाने तक सड़क जाम नहीं हटा और ना हीं लोग मानने को तैयार थे। इस संबंध

में संशय बना हुआ है कि आखिरकार अपराधियों ने युवक को गोली क्यों मारी, लेकिन कुछ लोगों ने दबे जबान बताया कि यहां पर कुछ ताड़ी का दुकान है जिस वजह से ही कोई अंदरूनी आदवत था। मृतक की पहचान दलसिंहसराय थाना क्षेत्र के केवटा वार्ड संख्या 6 निवासी लक्ष्मी महतो का पुत्र जितेंद्र महतो के रूप में की गई है। घटनास्थल पर पुलिस पहुंचकर छानबीन कर रही है। परंतु इस हत्या मामले का कोई खुलासा अब तक नहीं हो पाया है। वहीं परिजन सहित अन्य आक्रोशित ग्रामीणों के द्वारा सड़क जामकर प्रदर्शन कर रहे हैं। बताया जाता है जिले में इन दिनों अपराध की घटना चरम सीमा पर है, आये दिन कोई न कोई घटना घटित हो रही है।

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की प्रगति यात्रा आज वैशाली में

दैनिक बिहार पत्रिका

वैशाली । मुख्यमंत्री नीतीश कुमार प्रगति यात्रा के क्रम में दिनांक 6 जनवरी, 2025 को वैशाली जिला में आ रहे हैं। इस दौरान वे पटेढ़ी बेलसर प्रखंड के नगवां ग्राम तथा महनार में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान सहित करीब 350 योजनाओं का उद्घाटन-शिलान्यास करेंगे, जिसकी कुल राशि करीब 278 करोड रुपए है।

सर्वप्रथम मुख्यमंत्री नगवां गांव जाएंगे। वहां जल जीवन हरियाली अभियान अंतर्गत तालाब के सौंदर्यकरण का लोकार्पण करेंगे। साथ ही यहां कई योजनाओं का उद्घाटन-शिलान्यास भी करेंगे। इसके बाद उत्क्रमित मध्य विद्यालय नगवां में जीविका, ग्रामीण विकास, समाज कल्याण, शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग आदि विभागों के लगे स्टाल का निरीक्षण करेंगे। नगवां के बाद मुख्यमंत्री महनार जाएंगे, जहां आईटीआई का उद्घाटन करेंगे। साथ ही यहां से कई योजनाओं का उद्घाटन-शिलान्यास भी करेंगे। इसके उपरांत मुख्यमंत्री बिहार सुधारात्मक प्रशासनिक संस्थान (BICA), हाजीपुर में उच्च अधिकारियों के साथ जिला में चल रही योजनाओं की समीक्षा बैठक करेंगे। इसकी जानकारी BICA, हाजीपुर में आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में अपर समाहर्ता विनोद कुमार सिंह ने दी। प्रेस कॉन्फ्रेंस में जिला जन संपर्क पदाधिकारी नीरज भी मौजूद थे।

उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक ने बिहार के विभिन्न स्थानों पर नए बैंकिंग आउटलेट्स का उद्घाटन किया

बिहार में कुल 250 बैंकिंग आउटलेट्स स्थापित

दैनिक बिहार पत्रिका

उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड ने बिहार के माननपुर (मंगेर), फतेहपुर शाहबाज (पटना), सखसोहरा (पटना), तितारा (गोपालगंज), और अगियोन (औरंगाबाद) में नए बैंकिंग आउटलेट्स का उद्घाटन किया है। इन उद्घाटनों के साथ, बैंक ने बिहार में कुल 250 बैंकिंग आउटलेट्स और राष्ट्रीय स्तर पर 1,028 आउटलेट्स स्थापित कर लिए हैं। माननपुर (मंगेर), फतेहपुर शाहबाज (पटना), सखसोहरा (पटना), तितारा (गोपालगंज), और अगियोन (औरंगाबाद) सहित विभिन्न क्षेत्रों के निवासी अब बैंक के विभिन्न उत्पादों का लाभ उठा सकते हैं, जिनमें बचत खाते, चालू खाते, निश्चित जमा, और आवर्ती जमा शामिल हैं। बैंक विभिन्न ऋण उत्पाद भी प्रदान करता है, जैसे कि आवास ऋण, व्यापार ऋण, संपत्ति के खिलाफ ऋण, क्रेडिट, बीमा और निवेश उत्पाद। बैंक की इंफ्रास्ट्रक्चर, डिजिटल बैंकिंग क्षमताओं और

एटीएम नेटवर्क से ग्राहकों को सहज बैंकिंग अनुभव मिलेगा। इस विस्तार पर टिप्पणी करते हुए उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड के एमडी और सीईओ श्री गोविंद सिंह ने कहा, बिहार के विभिन्न स्थानों में हमारे नए बैंकिंग आउटलेट्स का उद्घाटन हमारी राज्य में अपनी उपस्थिति बढ़ाने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इन क्षेत्रों का ऐतिहासिक महत्व, समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और मजबूत सामुदायिक संबंध हमारे शाखाओं के लिए आदर्श वातावरण प्रदान करते हैं। ये नए आउटलेट्स स्थानीय निवासियों की वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए रणनीतिक रूप से स्थापित किए गए हैं, जिससे व्यक्तिगत बैंकिंग सेवाओं से लेकर व्यापार ऋण तक, आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा मिलेगा। इन समुदायों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करते हुए, हम उनके समग्र विकास और समृद्धि में योगदान देने का लक्ष्य रखते हैं। ये बैंकिंग आउटलेट्स व्यापार विकास सेवाओं के लिए माइक्रो-बैंकिंग ऋण प्रदान करेंगे, जो ऐसे वंचित या निम्न-आय वाले व्यक्तियों या समूहों को उपलब्ध होंगे जिनके पास वित्तीय सेवाओं तक सीमित पहुंच है। JLG मॉडल समूह ऋण मॉडल है, जो व्यक्तियों को व्यक्तिगत रूप से बिना किसी सुरक्षा या गारंटी के ऋण लेने की अनुमति देता है, जबकि समूह के भीतर आपसी समर्थन और ऋण के त्वरित पुनर्भुगतान के माध्यम से क्रेडिट अनुशासन को बढ़ावा देता है। ग्राहक बैंकिंग सेवाओं का उपयोग विभिन्न चैनलों के माध्यम से कर सकते हैं, जैसे कि बैंकिंग आउटलेट्स, माइक्रो एटीएम (बैंकिंग घंटों के दौरान), इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (UPI) और कॉल सेंटर।

लालू यादव को बोरो प्लेयर की है जरूरत: जीतन राम मांझी

दैनिक बिहार पत्रिका

गया। केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी बोधगया पहुंचे, जहां उन्होंने बोधगया स्थित अपने आवास पर एक प्रेस वार्ता को संबोधित किया। प्रेस वार्ता के दौरान उन्होंने लालू यादव द्वारा नीतीश कुमार के अपने साथ आने के सवाल पर कहा कि वे बुला रहे हैं और बुलाते रहे, उन्हें एक बोरो प्लेयर की जरूरत है। लालू यादव समझ रहे हैं कि उनके पैर के नीचे की धरती खिसक रही है, उन्होंने जो काम किया है वे खुद जानते हैं, उनके बुलाने से कोई फर्क नहीं पड़ता है,एनडीए गठबंधन सशक्त है। वहीं प्रशांत किशोर द्वारा किए जा रहे आमरण अनशन पर उन्होंने कहा कि उनको जो करना है करते रहे, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। वे राजनीतिक खेल खेल रहे हैं। आमरण अनशन करना है, तो करते रहे. सरकार अच्छा काम कर रही है। बीपीएससी अभ्यर्थियों की परीक्षा ली जा चुकी है, अब कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है।वही उन्होंने कहा कि ऐसी सूचना मिल रही है कि जन वितरण प्रणाली केंद्रों पर 5 किलो की जगह 4 किलो अनाज दिया जा रहा है. यानी एक किलो अनाज काम दिया जाता है।जब लाभार्थी पीडीएस दुकानदार से इस संबंध में बात करते हैं तो कहा जाता है कि उन्हें ऊपर कमीशन देना पड़ता है।यह बड़ा ही गंभीर मामला है. हम जिला प्रशासन को चेतावनी देना चाहते हैं, इस पर अविलंब रोक लगाया जाए. पूरे गया जिले में इस तरह की शिकायत मिल रही है।

सभी केंद्रों पर अनाज कम दिए जाने का मामला एक गंभीर विषय है. इस पर प्रशासन त्वरित कार्रवाई करें।

वरिष्ठ पत्रकार डॉ अरविन्द वर्मा, अखिल भारतीय जायसवाल (सर्ववर्गीय) महासभा के वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सह राष्ट्रीय मीडिया प्रवक्ता बने, बधाईयों का लगा तांता

दैनिक बिहार पत्रिका

खगड़िया। नव वर्ष में नया तोहफ़ा मिला फ़रकिया के वरिष्ठ पत्रकार सह समाजसेवी डॉ अरविन्द वर्मा को। अखिल भारतीय जायसवाल (सर्ववर्गीय) महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मदनलाल प्रभातीलाल जायसवाल ने संविधान में दी गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए वरिष्ठ पत्रकार सह समाजसेवी डॉ अरविन्द वर्मा को सत्र 2024 - 2027 हेतु महत्वपूर्ण राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष सह राष्ट्रीय मीडिया प्रवक्ता पद पर नियुक्त किया। डॉ अरविन्द वर्मा को महासभा के मिले नए दायित्व पर देश भर से मिल रहे बधाईयों का तांता लग गया। अखिल भारतीय स्तर की संस्था में बिहार से एकमात्र डॉ अरविन्द वर्मा ही ही हैं, जिन्हें राष्ट्रीय मीडिया प्रवक्ता पद की ज़िम्मेदारी दी गई है। नवनियुक्त राष्ट्रीय मीडिया प्रवक्ता डॉ अरविन्द वर्मा ने मीडिया से कहा मुझ पर भरोसा जताने के लिए अहमदाबाद, गुजरात निवासी महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मदन प्रभातीलाल जायसवाल का प्रति आभार प्रकट करता हूं। डॉ वर्मा ने यह भी कहा अपने कर्तव्य का निर्वाह अवश्य करुंगा।

मुझ पर भरोसा जताने के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष मदनलाल प्रभातीलाल जायसवाल को आभार - डॉ अरविन्द वर्मा

राष्ट्रीय मीडिया प्रवक्ता डॉ अरविन्द वर्मा को बधाई देने वालों में प्रमुख हैं राष्ट्रीय महासचिव आदित्य वर्धनम, कृष्ण कुमार जायसवाल, प्रेम कुमार, डॉली देवी, मनीषा जायसवाल, अशोक कुमार, संजय कुमार, प्रदीप भगत, इन्दु प्रभा, ई० अभिषेक, , अरुण वर्मा, किरण देवी,कैलाश चंद्र तथा अनिल जायसवाल आदि।

एक नज़र इधर भी

डेहरी: सेवानिवृत एडीएम को समारोह में दी गई विदाई

दैनिक बिहार पत्रिका

डेहरी। रोहतास शिक्षा विभाग के जिला स्तरीय पदाधिकारियों के सौजन्य से अरमान डेहरी₹ के तत्वावधान में डेहरी नगर के मकराईन अवस्थित ₹स्वराज भवन₹ के सभागार में आयोजित समारोह में सेवानिवृत अपर जिला दंडाधिकारी चंद्रशेखर प्रसाद सिंह को सम्मानित करते हुए भाव भीनी बिदाई दी गई। उक्त समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व विधायक सोम प्रकाश एवं विशिष्ट अतिथि जिला शिक्षा पदाधिकारी मदन राय थे। सभा की अध्यक्षता ₹अरमान डेहरी₹ के अध्यक्ष डॉ. राम नाथ सिंह, पूर्व बैंक प्रबंधक ने की। विशिष्ट वक्ताओं में जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (स्थापना) श्री निशांत गुंजन, जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (प्रा० शिक्षा) श्री रोहित रौशन, जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (मध्याह्न भोजन) श्री रविन्द्र कुमार एवं कम्युनिस्ट नेता श्री ब्रज मोहन सिंह (पूर्व बैंक प्रबंधक), आदि शामिल थे। समारोह में श्री चंद्रशेखर प्रसाद सिंह के सरल, माधुर्य एवं नियमों/सिद्धांतों पर अडिग व्यक्तित्व की विस्तार से चर्चाएं हुईं। श्री चंद्रशेखर जी का यह शेर पूरे माहौल को भाव विह्वल कर दिया कि -तेरी बंदगी से मिला है, 'मेरे वजूद को शोहरत।

मेरा जिक्र ही कहाँ था, तेरी रहमतों से पहले।'

'यह प्यार ही दौलत है, ये बिछुड़ने का दर्द भी दौलत है, जो कुछ भी दौलत है सब तेरी ही बदौलत है।'

उद्घाटन मैच का विजेता बना नगर परिषद का वार्ड 14

दैनिक बिहार पत्रिका

डेहरी। रोहतास। हिमांशु फाउंडेशन व बाबा वीर कुंवर टूर्नामेंट कमिटी के तत्वावधान में आयोजित 13वी नगर चैंपियनशिप का उद्घाटन मैच वार्ड 10 बनाम वार्ड 14 के बीच खेला गया। मैच के प्रारंभ से पूर्व टूर्नामेंट के उद्घाटनकर्ता डेहरी डालमियानगर नगर परिषद की मुख्य पार्षद शशि कुमारी एवं मुख्य अतिथि उनके प्रतिनिधि सह राजद अति पिछड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश महासचिव गुड्डू चंद्रवंशी, विशिष्ट अतिथि अकोढ़ी पैक्स अध्यक्ष राजू यादव ने फीता काटकर किया। साथ मे उपस्थित अतिथि शसक्त स्थायी समिति सदस्य कलावती देवी, ऋतु हज़ारिका, डॉ रामनाथ सिंह, ब्रजमोहन सिंह, डॉ लक्ष्मण सिंह, बैंक प्रबंधक जितेंद्र सिन्हा, पार्षद प्रतिनिधि राजू यादव, पप्पू गुप्ता, पार्षद राजेश कुमार, अधिवक्ता राजेश सिंह, इंद्र कुमार बाघा, और उपस्थित सभी अतिथियों ने खिलाड़ियों से परिचय लिया। राष्ट्रगान के बाद पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, एवं शहर के सामाजिक व्यक्ति गया शर्मा व उनके अग्रज गोरख नाथ विमल और इस बीच हमारे शहर से गुजरे हुए तमाम लोगों के लिये शोक व्यक्त करते हुए दो मिनट का मौन रखा गया। ततपश्चात अंपायर शिशिर और प्रिंस द्वारा वार्ड 10 और वार्ड 14 के कप्तानों के बीच टॉस कराया गया, जिसे वार्ड 10 ने जीतकर क्षेत्ररक्षण का फैसला लिया, बल्लेबाजी को उतरी वार्ड 14 की टीम निर्धारित 15 ओवर में 153 रन बनाकर 154 का लक्ष्य वार्ड 10 को दिया जिसके जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी वार्ड 10 की टीम 110 पर ढेर हो गयी और 49 रनों से वार्ड14 ने मैच जीत लिया, आज के मैन ऑफ द मैच ऋषि को बेहतरीन बल्लेबाजी के लिए दिया गया। कमिटी के सदस्य मुन्ना जी ने बताया कि कल का मैच वार्ड 5 बनाम वार्ड 38 के बीच खेला जाएगा। इस दौरान कमिटी के निदेशक अधिवक्ता रवि शेखर, अध्यक्ष डॉ ओ पी आनन्द, महासचिव प्रो रणधीर सिन्हा, संयोजक छोटू यादव, सोनू पांडेय, चंदन, शिबू, राज बाबू, राजेश इत्यादि मौजूद रहे।

नाला निर्माण कार्य के दौरान तीन मजदूरों पर मिट्टी का घंसना गिरा, एक मजदूर की दबकर मौ'त

दैनिक बिहार पत्रिका

मजदूर के दबने की सूचना पर लोगों की उमड़ी भीड़

समस्तीपुर जिले के कर्पूरीग्राम थाना क्षेत्र अंतर्गत शम्भूपट्टी गांव में रविवार की दोपहर नगर निगम द्वारा हो रहे नाला निर्माण के दौरान मिट्टी का धंसना गिरने से एक मजदूर की मौत हो गयी वहीं दो मजदूर को हल्की चोटें आयी। मिट्टी में दबे मजदूर की सूचना मिलते ही वहां लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा। इस दौरान दो मजदूर तो आसानी से निकल गये लेकिन एक मजदूर को काफी मशक्कत के बाद जेसीबी की मदद से मिट्टी हटाकर निकाला गया। मरनासन स्थिति में मजदूर को निकालने के बाद उसे एंबुलेंस के सहारे एक निजी अस्पताल ले जाया गया जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक मजदूर कटिहार जिले के प्राणपुर थाना क्षेत्र के गढ़ीपुर पंचायत सफीकुल इस्लाम के रूप में हुई है।लोगों का बताना है की घटनास्थल पर ही मजदूर की मौत हो चुकी थी। बताया गया है कि संवेदक के द्वारा वहां बिना सेफ्टी के ही नाला निर्माण का कार्य कराया जा रहा था। इधर घटना की सूचना पर उक्त स्थल पर सैकड़ों लोगों की भीड़ उमड़ गई थी। खबर लिखे जाने तक मृतक मजदूर का शव पोस्टमार्टम के लिये सदर अस्पताल नहीं पहुंचा था। समस्तीपुर नगर निगम अंतर्गत शंभूपट्टी वार्ड संख्या-30 से ताजपुर रोड आयकर कार्यालय तक स्ट्रॉम वाटर ड्रेनेज योजना के तहत बड़ा नाला निर्माण कराया जा रहा है। इस बड़े नाला निर्माण से शंभूपट्टी, बाजेपुर, पाहेपुर, मूसापुर, दुधपुरा, अमीरगंज, धर्मपुर आदि जगहों का पानी निकासी का मास्टर प्लान बनाया गया है। हालांकि इसके निर्माण के दौरान निर्माण कार्य में लगे मजदूरों के सेफ्टी को लेकर सवाल पहले से उठाया जा रहा था, इस बीच रविवार को एक मजदूर की मौत घंसना में दबकर हो गयी।

'शिवहर की उम्मीद, शिवहर का संकल्प'

दैनिक बिहार पत्रिका

गया। शिवहर विधानसभा क्षेत्र की जनता हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा सेकुलर एवं हमारे सर्वमान्य नेता जीतन राम मांझी , डॉ संतोष मांझी से काफी स्नेह रखती है।

वर्ष 2015 में यह सीट एनडीए के तहत हम सेकुलर को मिली थी।

तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद महज 465 वोटों के अंतर से यह सीट हार गए थें।

वर्ष 2020 के विधानसभा चुनाव में यह सीट जेडीयू ने लड़ा और भारी भरकम वोटों से उनके उम्मीदवार पराजित हुए है। गणित को समझना है।

जनभावना को समझना है।

यह सीट पुनः मांझी जी की झोली में डालना है।

जमीन विवाद को लेकर दो पक्षों में जमकर हुई मार-पीट में एक महिला मुर्छित

दैनिक बिहार पत्रिका

चांदन/बांका। आंनदपुर थाना के बारने गांव में जमीन विवाद के पुरानी रंजिश में बर्तन धो रही रही एक महिला के साथ जम कर लात घूसों से मारपीट कर करने का मामला सामने आई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार आनन्दपुर थाना क्षेत्र के बारने गांव कि झूनवां देवी पति शिया राम यादव रविवार कि सुबह अपने घर के वाली खेत पर बर्तन धो रही रही थी। इसी बीच गांव के ही शालिग्राम यादव के कहने पर उनकी पत्नी संगीता देवी सहित घुटरी देवी आदि के बीच कहा सुनी होते-होते विवाद में तब्दील हो गई और, और मौक़ा पाकर उक्त लोगों ने झुनवा देवी पति शिया राम यादव को मारकर जख्मी कर दिया। घटना के परिजनों ने जख्मी महिला को लेकर आनन्दपुर थाना पहुंची, जहां से आनन्दपुर थाना पुलिस इलाज कराने हेतु प्राईवेट क्लिनिक भेज दिया। जख्मी झूनवां देवी ने बताई कि मैं अकेली बर्तन धो रही थी,इसी बीच उपरोक्त व्यक्ति ने मार पीट कर जख्मी कर दिया।इस संदर्भ में आनन्दपुर थाना अध्यक्ष विपिन कुमार ने बताया मामले कि छानबीन कि जा रही है।

ताड़ पत्ता काटने को लेकर दो पक्षों में मारपीट एक जख्मी

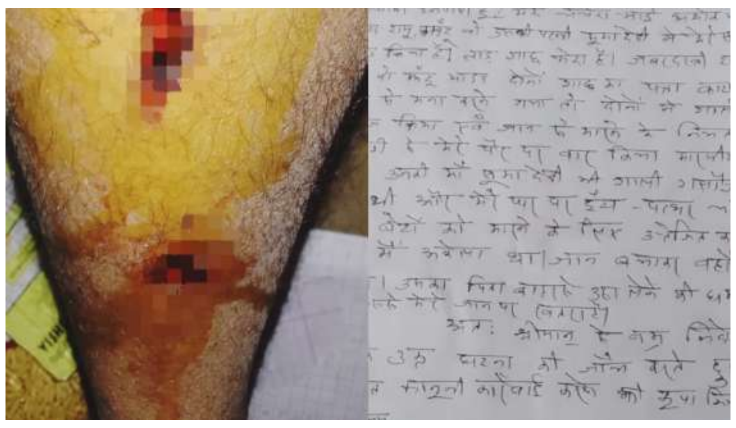

दैनिक बिहार पत्रिका

चांदन/बांका। सुइया थाना अंतर्गत धनुवसार पंचायत के लरियाचट्टी गांव में मामूली विवाद को लेकर पुरानी रंजिश में दो पक्षों में जम कर मारपीट होने कि घटना सामने आई है। जबकि मारपीट की घटना में एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया है। घटना को लेकर जख्मी मुकेश यादव पिता स्वर्गीय खीरो यादव ने गांव के अपने ही चचेरे भाई अशोक यादव व झंटू यादव ,रामू यादव एवं सूमा देवी के खिलाफ सुइयां थाना में आवेदन देकर कार्रवाई करने कि गुहार लगाई है। आवेदन में बताया कि रामू यादव और झंटू यादव दोनों मेरे हिस्से के पर लगा ताड़ का पत्ता काट रहा था।जब मैं मना करने वहां पहुंचा तो अशोक यादव के इशारे पर दोनों ने मार-पीट करने लगा और कुल्हाड़ी चला कर पैर जख्मी कर दिया। किसी तरह भागकर घर आया तो अशोक यादव कि सूमा देवी सहित उपरोक्त लोगों ने मेरे घर पर ईंट पत्थर चलाते हुए जान मारने कि धमकी देने लगा। मुकेश यादव ने आगे बताया कि उपरोक्त व्यक्ति मनबढ़ू किस्म का है, इसके पुर्व भी मारपीट करने का अंजाम दे चुका है। इस संदर्भ में सुईया थाना अध्यक्ष विशाल कुमार ने बताया कि जमीन से जुड़े मामला प्रतिक हो रही है जांच पड़ताल कर दोषी के अग्रतर कार्रवाई कि जाएगी।

गरीब व जरूरतमंद लोगों को मुखिया ने किया कम्बल वितरण

दैनिक बिहार पत्रिका, चांदन/बांका। शीत लहर और बढ़ते ठंड को मद्देनजर पंचायती राज विभाग विभाग के आदेशानुसार चांदन प्रखंड अंतर्गत दक्षिणी बारने ग्राम पंचायत मुखिया तुलसी रजक द्वारा आवंटित 10 कम्बल वितरण किया गया। मौके पर आनन्दपुर थाना अध्यक्ष विपिन कुमार आदि मौजूद थे। मुखिया तुलसी रजक ने बताया कि विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए असहाय गरीब परिवारों के बीच 10 कम्बल वितरण किया गया है। ताकि गरीब एवं वृद्ध लोग शीत लहर से निजात पा सके।

कड़ाके के ठंड के बीच कांग्रेस नेता ने सैकड़ों गरीब असहाय लोगों के बीच कंबल किया वितरण

दैनिक बिहार पत्रिका

समस्तीपुर। बीते एक दशक से अधिक केंद्र की सत्ता पर काबिज एनडीए सरकार की जनविरोधी नीतियों का यह परिणाम है कि देश में महंगाई व बेरोजगारी चरम पर है। किसान व मजदूरों की हालत दिन पर दिन दयनीय होती जा रही है। देश में संवैधानिक संस्थाओं को लगातार कमजोर करने का प्रयास जारी है। वहीं, विपक्षी दलों की आवाज लगातार दबाई जा रही है। अतएव हमें संगठित होकर संघर्ष करने की जरूरत है। यह बातें रविवार को कल्याणपुर, टेढ़ीबाजार, कुरसाहा सहित विभिन्न स्थानों पर ज्वलंत जनसमस्याओं को लेकर स्थानीय लोगों से रुबरु होते हुए प्रदेश युवा कांग्रेस के महासचिव आयुष भगत ने कही। वरीय कांग्रेस नेता प्रवीण भगत ने कहा कि खेती किसानी घाटे का सौदा साबित हो रही है। किसानों की आय दोगुना करने का वादा करने वाली केंद्र की भाजपा सरकार की घोषणा छलावा साबित हो रही है। इस दौरान स्थानीय लोगों ने स्मार्ट मीटर, दाखिल खारिज कराने में कर्मियों की मनमानी, भूमि सर्वे को लेकर हो रही परेशानी सहित कई तरह की समस्याओं से कांग्रेस नेताओं का ध्यान आकृष्ट कराया.इस क्रम में आयुष भगत ने दादा स्व. बलिराम भगत के पद चिन्हों पर चलते हुए क्षेत्र की सेवा करने का संकल्प लिया. वहीं कांग्रेस नेताओं ने निजी कोष से बढ़ती ठंड को लेकर सैकड़ों गरीब असहाय लोगों के बीच कंबल वितरण किया। इस मौके पर प्रभात राय, डॉ. निगहबान खान, अधिवक्ता सिकंदर राय दिनकर राय, अधिवक्ता इबरार रजा, राम उदगार राय, कौशलेंद्र कुमार बुलेट, उमाशंकर सिंह, मो. सिराज, पंकज कुमार, नंद किशोर कापर मौजूद थे.

अजय कुमार का इंस्पिरेशनल सोशल आइकन अवॉर्ड के लिए चयन

दैनिक बिहार पत्रिका

समस्तीपुर ।मोहनपुर प्रखंड के समाजसेवी अजय कुमार का प्रेरणादायक सामाजिक आइकॉन पुरस्कार के लिए चयन हुआ है। अजय कुमार विगत 8 वर्षों से राष्ट्रीय सेवा योजना, नेहरू युवा केंद्र, नमामि गंगे एवं चलो कुछ न्यारा करते हैं फाउंडेशन जैसे समाज सेवी संगठन से जुड़कर समाज एवं राष्ट्र के बेहतर निर्माण के उद्देश्य से समाज सेवा दे रहे हैं। अजय कुमार कई बार राज्य स्तर से लेकर राष्ट्र स्तर के कार्यक्रम में शामिल होकर सम्मानित हो चुके हैं। उनके सराहनीय कार्य को देखते हुए, चलो कुछ न्यारा करते हैं फाउंडेशन के नेशनल कमेटी के द्वारा उन्हें यह पुरस्कार उड़ीसा के जगन्नाथ पुरी में दिया जाएगा। यह पुरस्कार समारोह इसी महीने 13-15 जनवरी को ओडिशा राज्य के पूरी में सीकेएनकेएच फाउंडेशन के उड़ान उत्सव के अंतर्गत आयोजित किया जाएगा। इस पुरस्कार को लेकर मोहनपुर के क्षेत्र के युवा साथियों एवं गणमान्य नागरिकों के बीच अजय कुमार सराहनीय के पात्र बन चुके हैं। उन्होंने अपने माता-पिता, गुरु और क्षेत्र का नाम रोशन कर ऊंची बुलंदियों पर पहुंचने का काम किया है। इस अवसर पर उनको बहुत से सामाजिक संगठनों और उनके प्रियजनों ने बधाई संदेश दिए। एक बयान में अजय कुमार ने इस अवॉर्ड के लिए चयन किए जाने पर सीकेएनकेएच फाउंडेशन के राष्ट्रीय समिति का आभार व्यक्त किया , तथा उड़ान उत्सव संचालन समिति का भी आभार व्यक्त किया।

अभाविप कार्यकर्ताओं ने किया बैठक कई मुद्दों पर हुई चर्चा

दैनिक बिहार पत्रिका

समस्तीपुर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद समस्तीपुर जिला की जिला बैठक स्थानीय विद्यार्थी परिषद कार्यालय में जिला संयोजक कुंदन यादव की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस बैठक में मुख्य रूप से स्वामी विवेकानंद जयंती, युवा सप्ताह ,सुभाष चंद्र बोस जयंती एवं आगामी योजना पर विस्तृत चर्चा की गई।बैठक को संबोधित करते हुए प्रांत उपाध्यक्ष डॉ स्मिता झा एवं विभाग प्रमुख डॉक्टर नीतिका सिंह ने कहा कि स्वामी विवेकानंद का जीवन हम सबों के लिए प्रेरणा का स्रोत है हम सभी कार्यकर्ताओं को युवा सप्ताह अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर स्वामी जी के संदेशों कोजन-जन तक पहुंचाना होगा। वही प्रांत सहमंत्री अनुपम कुमार झा ने कहा कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतीक स्वामी विवेकानंद जी की जयंती को पूरे धूमधाम से युवा दिवस के रूप में मनाया जाएगा इस अवसर पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी एवं विजेताओं को सम्मानित किया जाएगा साथी युवा सप्ताह में आयोजित प्रतियोगिता के विजेता को सुभाष चंद्र बोस जी की जयंती के अवसर पर सम्मानित किया जाएगा।जिला प्रमुख डॉक्टर राहुल मनहर एवं नगर अध्यक्ष चंदन मिश्रा ने बताया कि विवेकानंद जयंती की पूर्व संध्या पर विद्यार्थी परिषद के द्वारा दीपोत्सव कार्यक्रम भी आयोजित किया जाएगा। मौके पर जिला सोशल मीडिया संयोजक निक्कू आर्या, शुभम कुमार , प्रिंस झा, प्रिंस राज मनीष चौधरी, सिंटू पांडे, विनीत कुमार, रजनीश कुमार, सुमित कुमार, अजय प्रताप प्रत्यूष कुमार शालू कुमारी अंजली कुमारी चंदन मिश्रा प्रणव कश्यप आदि उपस्थित थे।

दो दिवसीय शॉर्ट बाउंड्री क्रिकेट टूर्नामेंट का विद्यालय प्राचार्य ने फीता काटकर किया उद्घाटन

दैनिक बिहार पत्रिका

फुल्लीडुमर/बांका। प्रखंड के कैथा पंचायत अंतर्गत मध्य विद्यालय लौढ़िया कैथा के खेल मैदान के प्रांगण में युवा क्रिकेट क्लब बेला के युवा सदस्यों द्वारा दो दिवसीय शॉर्ट बाउंड्री क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। जानकारी के अनुसार आयोजित टूर्नामेंट का उद्घाटन मध्य विद्यालय कैथा लौढ़िया के प्राचार्य मुकेश कुमार, सहायक शिक्षक सुबोध, रामशंकर, अजय, मैच आयोजन समिति के सदस्य किशोर, मोनू ,अक्षित, अभिजीत, विमल, हिमांशु एवं अन्य के द्वारा संयुक्त रूप से फीता काटकर किया गया। आयोजित उद्घाटन मैच तक्कीपुर एवं मोतिया टीम के बीच खेला गया। जहां तक्कीपुर की टीम टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 50 रन बनाई। वहीं जवाब में उतरी मोतिया की टीम 40 रन बनाकर ही ऑल आउट हो गई। इस प्रकार तक्कीपुर की टीम 10 रन से मैच जीत गई। वहीं आयोजित मैच में अंपायर की भूमिका में किशोर ,सूरज एवं कमेंटेटर की भूमिका में बंमबंम कुमार एवं अन्य थे। मौके पर काफी संख्या में क्रिकेट खेल प्रेमी रोमांचक मुकाबले का आनंद लेते देखे गए। वही मैच आयोजन समिति के सदस्य किशोर कुमार ने बताया कि रविवार की देर शाम तक फाइनल मैच खेला गया।

हिन्दू हृदय सम्राट श्रद्धेय किशोर कुणाल की श्रद्धांजलि सभा का किया गया आयोजन

दैनिक बिहार पत्रिका

बौंसी/बांका। हिन्दू हृदय सम्राट श्रद्धेय किशोर कुणाल की श्रद्धांजलि सभा का आयोजन शनिवार को लक्ष्मी नारायण मंदिर पापहरणी मंदार में आयोजित की गयी। मालूम हो की किशोर कुणाल, जिन्हें आचार्य कुणाल के नाम से भी जाना जाता है, भारत के बिहार राज्य से गुजरात कैडर के 1972 बैच के भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) अधिकारी थे। अपने पुलिस करियर के दौरान, उन्हें विश्व हिंदू परिषद और बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के बीच मध्यस्थता करने के लिए तत्कालीन प्रधान मंत्री वीपी सिंह द्वारा अयोध्या विवाद पर विशेष कर्तव्य अधिकारी (ओएसडी) के रूप में नियुक्त किया गया था । उन्होंने चंद्रशेखर और पीवी नरसिम्हा राव के प्रधानमंत्रित्व काल में इस पद पर काम करना जारी रखा । इनका जन्म 10 अगस्त 1950 को हुआ था। उनके नेतृत्व में महावीर मंदिर ट्रस्ट ने वर्ष 1998 में पटना में महावीर कैंसर संस्थान और अनुसंधान केंद्र (एमसीएसआरसी) की शुरुआत की। कुणाल पटना के महावीर मंदिर के सचिव भी थे। उनके सचिवत्व में

महावीर मंदिर का जीर्णोद्धार कार्य 30 अक्टूबर 1983 को शुरू हुआ और इसका उद्घाटन 4 मार्च 1985 को हुआ। राज्यपाल आरएस गवई ने सोमवार को कहा कि महावीर मंदिर एक आदर्श धार्मिक ट्रस्ट है और देश के अन्य ट्रस्टों को भी इसका अनुकरण करना चाहिए। महावीर ट्रस्ट ने बाद में महावीर कैंसर संस्थान की स्थापना की । समिति कंकरबाग में महावीर आरोग्य संस्थान नामक एक अन्य अस्पताल भी चलाती है और इसके परिसर में महावीर नेत्रालय की स्थापना की गई है जो आंखों की समस्याओं से पीड़ित लोगों की जरूरतों को पूरा करता है। मंदिर ने पहले ही चार बड़े अस्पताल स्थापित किए हैं और जरूरतमंद लोगों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

29 दिसंबर 2024 को सुबह-सुबह कुणाल को दिल का दौरा पड़ा और उन्हें तुरंत पटना के महावीर वात्सल्य अस्पताल ले जाया गया । उसी दिन बाद में 74 साल की उम्र में उनकी मृत्यु हो गई। बिहार महावीर मंदिर ट्रस्ट (बीएमएमटी) के सचिव के रूप में उनके नेतृत्व में, उन्होंने दुनिया के सबसे बड़े मंदिर के निर्माण का बीड़ा उठाया है। उन्होंने कहा, ₹वे बिहार के पूर्वी चंपारण जिले में कंबोडिया में 12वीं सदी के अंगकोर वाट मंदिर से भी बड़ा मंदिर बनाएंगे । 2008 में उन्हें समुदाय और सामाजिक सेवाओं में उनके योगदान के लिए भगवान महावीर पुरस्कार मिला। भारत की राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल द्वारा कुणाल को प्रदान किया गया यह पुरस्कार भगवान महावीर फाउंडेशन, चेन्नई द्वारा स्थापित किया गया है । आचार्य कुणाल यह पुरस्कार पाने वाले बिहार - झारखंड के पहले व्यक्ति हैं ।

उनका चयन भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री एमएन वेंकटचलैया की अध्यक्षता वाली जूरी द्वारा किया गया था । श्रद्धांजलि सभा राजाराम अग्रवाल, देवाशीष पाण्डेय, शंकर प्रसाद सिंह सहित काफी संख्या में लोग मौजूद थे।

मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को किया जागरूक

दैनिक बिहार पत्रिका

चांदन/बांका। आनंदपुर थाना क्षेत्र के कुसुमजोरी, दहगिलवा, अमजोरा, कुरुमटाड़ एवं भैरोगंज में मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता अभियान के तहत कार्यशाला का आयोजन कर महिला, युवा एवं बच्चों को दलित मुक्ति मिशन के निदेशक सह प्रशिक्षक द्वारा मानसिक स्वास्थ्य पर विस्तृत जानकारी देकर जागरूक किया गया। सर्वप्रथम परिचय सत्र में संस्था के निदेशक महेंद्र कुमार रौशन ने बताया कि यह आदित्य बिड़ला एजुकेशन ट्रस्ट के सौजन्य से जागरूकता अभियान चलायमान है, जिसका नेतृत्व श्रीमती निरजा बिड़ला करती हैं। आदित्य बिड़ला एजुकेशन ट्रस्ट मुंबई एक गैर-लाभकारी संगठन है,जो शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करता है। प्रशिक्षण में बताया गया कि मानसिक स्वास्थ्य एक व्यक्ति की भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कल्याण की स्थिति है। यह व्यक्ति की क्षमता को प्रभावित करता है कि वह अपने जीवन में चुनौतियों का सामना कैसे करता है, अपने संबंधों को कैसे बनाता और बनाए रखता है, और अपने जीवन को कैसे सार्थक और अर्थपूर्ण बनाता है। भावनात्मक स्वास्थ्य से अभिप्राय है। व्यक्ति की भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने की क्षमता से है। मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य से अभिप्राय है व्यक्ति की सोच और व्यवहार को प्रभावित करने वाली मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं की स्थिति से है। सामाजिक स्वास्थ्य से अभिप्राय है व्यक्ति के सामाजिक संबंधों और सामाजिक कौशलों की स्थिति से है। कार्यशाला में विभिन्न गाँव से कुल 187 महिला, युवा और बच्चे शामिल हुए। इस अवसर पर वार्ड सदस्य रूबी देवी, शिक्षक देवराज कुमार, सामाजिक कार्यकर्ता राजकुमार दास, सावित्री बाई माता समिति के नेत्री बंदना देवी, कुसमी देवी, खिरिया देवी, जीविका सदस्य रूबी देवी आदि अन्य गणमान्य लोगों ने न केवल सक्रिय रूप से भाग लिया, बल्कि अभियान की सराहना करते हुए स्वस्थ रहने के लिए चिंता, डर, भयमुक्त होकर जीवन सवारने पर बल दिया।

मंदार महोत्सव 2025 तैयारियों के तहत चलाया गया साफ-सफाई अभियान, हटाया गया अतिक्रमण

दैनिक बिहार पत्रिका

बौंसी/बांका। मंदार महोत्सव 2025 तैयारियों के तहत रविवार को जिला पदाधिकारी, बांका अंशुल कुमार के निर्देश पर मंदार मेला क्षेत्र, पापहरणी सहित अन्य स्थलों पर साफ-सफाई अभियान चलाया गया। इस दौरान प्रखंड विकास पदाधिकारी, बौंसी के नेतृत्व में विद्यालय के बच्चों द्वारा भी साफ-सफाई अभियान में भाग लिया गया। जिला पदाधिकारी के निर्देशानुसार मेला क्षेत्र में अतिक्रमण हटाओ अभियान के तहत अतिक्रमण हटाया गया। खेल मैदान बौंसी में भी अतिक्रमण हटाया गया।मंदार मेल को लेकर शहर में भारी भीड़ से काफी समस्या उत्पन्न हो जाती है जिसे लेकर स्थानीय पुलिस प्रशासन के द्वारा अतिक्रमण को हटाया गया। डेम रोड में रविवार को भारी संख्या में अतिक्रमण हटाने का अभियान चला कर इसकी कार्रवाई की गई। दुकानदार को पहले ही इसकी नोटिस दी गई थी इसके बाद पुलिस द्वारा यह कार्रवाई की गई है। प्रशासन का कहना है कि मेला के मध्य नजर यह कार्रवाई की जा रही है ताकि मेला आयोजन मे किसी तरह की बाधा उत्पन्न ना हो।

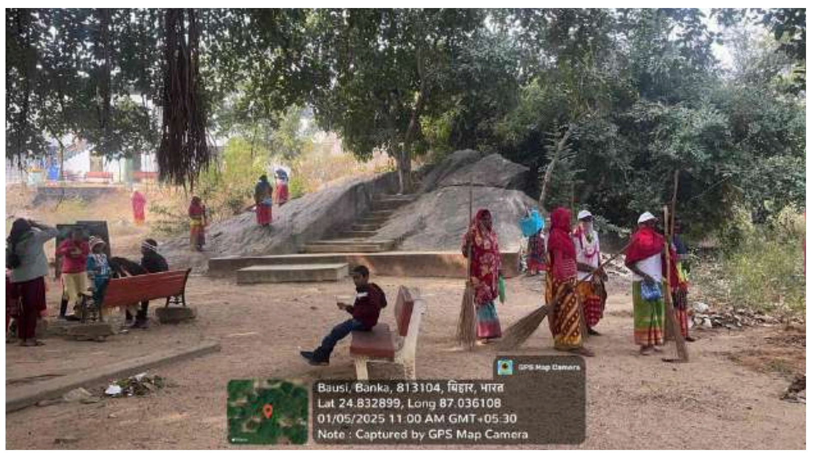

आपदा प्रबंधन विभाग और जिला प्रशासन के द्वारा विभिन्न स्थानों पर की गई अलाव की व्यवस्था

दैनिक बिहार पत्रिका

बांका। जिले में मौसम भी काफी सर्द हो गया और ठिठुरन बढ़ गई है। घरों में गर्म कपड़ों के साथ हीटर का उपयोग करना पड़ रहा है, तब सर्दी से राहत मिल रही है। मौसम में हुए बदलाव को लेकर मौसम विभाग के द्वारा पूर्वानुमान जारी किया जा रहा है। कृषि मौसम वैज्ञानिक के अनुसार आने वाले दिनों में पारा लुढ़कने की संभावना है। जिससे ठंड बढ़ने के आसार हैं। इधर कुहासा के कारण सड़क पर चलने में वाहनों को खासी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इस मौसम में कोहरा के कारण कई सड़क दुर्घटना भी घटी थी। जिससे कई लोगों की जाने भी चली गई थी। वहीं लोग सर्द हवाएं चलने से लोगों का जनजीवन प्रभावित हो रहा है। जिसको देखते हुए आपदा प्रबंधन विभाग और जिला प्रशासन के द्वारा जिला के विभिन्न स्थानों पर अलाव की व्यवस्था की गई है जिससे आम नागरिकों को ठंड से बचाव में राहत मिल रही है।

प्रथम महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले एवं फातिमा शेख का संयुक्त रूप से मनाया गया जयंती समारोह

दैनिक बिहार पत्रिका

समस्तीपुर। ताजपुर प्रखंड क्षेत्र के मौलानाचक स्थित दलित बस्ती में ऐपवा जिला अध्यक्ष की अध्यक्षता में भारत की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले एवं फातिमा शेख के चित्र पर माल्यार्पण कर 194वीं जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। मौके पर उपस्थित महिलाओं को संबोधित करते हुए ऐपवा जिला अध्यक्ष बंदना सिंह ने सावित्रीबाई फुले एवं फातिमा शेख के संघर्षों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम महिला शिक्षिका, समाज सुधारक और मराठी कवियित्री थीं। उन्होंने 1852 में बालिकाओं के लिए पहले विद्यालय की स्थापना की। वे सामाजिक क्रांति की अग्रदूत थीं। वे सिर्फ शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि बाल विवाह, विधवा उत्पीड़न जैसी कुरितियों पर अंकुश लगाने को लेकर संघर्ष किया। उन्होंने कहा कि सावित्रीबाई फुले एवं फातिमा शेख हम तमाम महिलाओं के लिए आदर्श व्यक्तित्व एवं कृतित्व हैं। उन्होंने हर तरह की प्रताड़ना का सहन करते हुए महिला को शिक्षित करने का जिम्मा उठाया। उस समय की सामंती व्यवस्था उनके उपर कीचड़, गोबर फेंका करती थी और उन्हें शिक्षा-दिक्षा का काम छोड़ने के लिए मजबूर किया जाता था लेकिन वे अपने रास्ते से पीछे नहीं हटीं। वे इस तरह से महिलाओं को आगे बढ़ाने का काम किया। आज जब एक ओर हर क्षेत्र में महिलाएं अपने परचम लहरा रहीं हैं, आगे बढ़ रही हैं तो दूसरी ओर वे विभिन्न प्रताड़ना की शिकार भी हो रहीं हैं। उनके साथ ब्लातकार, छेड़खानी एवं हत्या की घटनाएं बढ़ रही हैं। मोदी एवं नीतीश सरकार महिलाओं को आगे बढ़ाने को बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का नारा देती है वहीं महिलाओं की इज्जत-आबरू के साथ खिलवाड़ होता है महिलाओं के उपर सामाजिक व्यवस्था टिकी हुई है और वह परिवार को चलाते हुए समाज को भी बेहतर बनाने के लिए काम करती हैं लेकिन उन्हें सम्मान नहीं मिल पाता है। महिलाओं को अपने मान-सम्मान की रक्षा और अपना अधिकार पाने के लिए, आगे बढ़ने के लिए संगठित होकर अपने हक-अधिकार की लड़ाई लड़नी होगी। मौके पर भाकपा माले प्रखंड सचिव सुरेंद्र प्रसाद सिंह, शाखा सचिव रामचंद्र पासवान समेत अनीता देवी, सुनैना देवी, गीता कुमारी, राधा कुमारी, सावित्री देवी आदि बड़ी संख्या में महिलाएं उपस्थित थीं। भाकपा माले द्वारा आहूत 9 मार्च को पटना महाजुटान में भाग लेकर सफल बनाने की अपील की गई।

विश्व ब्रेल दिवस के अवसर पर लुईस ब्रेल की जयन्ती समारोह मनाई गई

दैनिक बिहार पत्रिका

गया । समर्पण स्पेशल स्कूल नेत्रहीन यूनिट, बिहार पी.डब्लू.डी. संघ, चाईल्ड कन्सर्न, एक्शन फॉर ऑल एवं बिहार नेत्रहीन खेल संघ के संयुक्त तत्वाधान में विश्व लुईस ब्रेल दिवस के अवसर पर 216वीं जयन्ती एवं एक दिवसीय दिव्यांगजन जन-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन आज दिनांक 4 जनवरी 2025 को पूर्वाहण 11 बजे से समर्पण सेमिनार हॉल, इलाहीबाग, नया बस स्टैण्ड बस अड्डा बैरिया, पो० बैरिया में किया गया है। आज के कार्यक्रम में सैंकड़ो दिव्यांगजन दृष्टिबाधित एवं अन्य दिव्यांगजन, दिव्यांगजन विशेषज्ञ, समाजसेवी, अभिभावकगण, छात्र आदि उपस्थित थे। ब्रेल दिवस मनाने का मख्य उद्देश्य दृष्टिबाधित व्यक्तियों को सशक्त बनाना, उनके लिए शिक्षा और करियर के अवसर सुनिश्चित करना और समाज में उनकी समान भागीदारी को बढ़ावा देना है। यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि सही संसाधनों और तकनीकों के माध्यम से दृष्टिबाधित व्यक्ति भी आत्मनिर्भर बन सकते हैं। आज के कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि डॉ० शिवाजी कुमार पूर्व राज्य आयुक्त दिव्यांगजन, बिहार सरकार, डॉ० विश्वेन्द्र कुमार सिन्हा प्रसिद्ध हड्डी रोग विशेषज्ञ, डॉ० राजीव गंगौल अध्यक्ष पाटलीपुत्रा पैरेन्टस एसोसिएशन, मधु श्रीवास्तवा अध्यक्ष, सिविल सोसाईटी फोरम हरदेव प्रसाद (कार्यकारी अध्यक्ष, ऑल इंडिया पी०डब्लू०डी०संघ, द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वल्लित कर किया गया है।इस मौके पर संतोष कुमार सिन्हा सी.ई.ओ. समर्पण, लक्ष्मीकान्त कुमर कार्यक्रम समन्वयक, समर्पण संदीप कुमार सचिव बिहार पारा स्पोर्ट्स एसोसिएशन, चन्दा सिंह सचिव, पाटलीपुत्रा पैरेन्ट्स एसोसिएशन रीना देवी प्राचार्या, समर्पण, माला देवी विशेष शिक्षिका, समर्पण, गुड्डु कुमार, नीतु कुमारी, सुनिल कुमार, शेखर चौरसिया आदि उपस्थित थे। सभी उपस्थित लोगों ने लुईस ब्रेल की प्रतिमा पर फुल माला अर्पण किये है।मुख्य अतिथि ने बताया कि लुईस ब्रेल दृष्टिबाधित दिव्यांगजनों के दृष्टिदाता थे और हम सबको उनके राहों पर चलना चाहिए। जिससे समाज में दृष्टिबाधित दिव्यांगजनों को उचित स्थान मिल सके। ब्रेल लिपि का अविष्कार से दृष्टिबाधित दिव्यांगजनों को पढ़ने में काफी सुविधा मिलती है आज दृष्टिबाधित दिव्यांगजन कई उच्च स्थानों पर विराजमान हैं और अपने कार्यों को बखूबी निभा रहें। हमें दिव्यांगजनों से प्रेरणा मिलती है कितनी कठिनाई रास्तों पर आगे निकल जाते हैं।सभी ने बताया कि ब्रेल लिपि का जन्म देनेबाले लुईस ब्रेल का जन्म 1809 ई० में फ्रांस के कुप्रे नामक गांव में हुआ था। लुई ब्रेल की आँखों की रोशनी महज तीन साल की उम्र में एक हादसे के दौरान नष्ट हो गई है। परिवार में तो दुःख का माहौल हो गया क्योंकि ये घटना उस समय की है जब उपचार की इतनी तकनीक इजात नही हुई थी जितनी कि अब है। बालक लुई बहुत जल्द ही अपनी स्थिती में रम गये थे। बचपन से ही लुई ब्रेल में गजब की क्षमता थी। हर बात को सीखने के प्रति उनकी जिज्ञास को देखते हुए, चर्च के पादरी ने लुई ब्रेल का दाखिला पेरिस के अंधविद्यालय में करवा दिया है। बचपन से ही लुई ब्रेल की अद्भुत प्रतिभा के सभी कायल थे। उन्होने विद्यालय में विभिन्न विषयों का अध्यन किया गया है। लुईस ब्रेल फ्रांस के शिक्षाविद तथा अन्वेषक थे जिन्होंने दृष्टिबाधित दिव्यांगजनों के लिए लिखने तथा पढ़ने की प्रणाली विकसीत की है। यह पद्धति 'ब्रेल' नाम से जगप्रसिद्ध है। फ्रांस में जन्मे

लुई ब्रेल अंधों के लिए ज्ञान के चक्षु बन गए हैं। ब्रेल लिपि के निर्माण से नेत्रहीनों की पढ़ने की कठिनाई को मिटाने वाले लुई स्वयंम भी नेत्रहीन थे। लुइस ब्रेल ने आठ वर्षो के अथक परिश्रम से इस लिपि में अनेक संशोधन किये और अंततः 1829 में छह बिन्दुओ पर आधारित ऐसी लिपि बनाने में सफल हुए हैं। अपनी अविष्कृत लिपि को दृष्ठि हीन व्यक्तियों के मध्य लगातार प्रचारित किया। संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 06 नवम्बर 2018 को एक प्रस्ताव पारित किया गया था, जिसमें हर साल 04 जनवरी को ब्रेल लिपि के आविष्कारक लुई ब्रेल के जन्मदिवस को उनके सम्मान में विश्व ब्रेल दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि हर दिव्यांगजन सशक्त बनेंगे एवं समाज के मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य किया जायेगा।ब्रेल एक स्पर्श आधारित लेखन प्रणाली है जो उभरे हुए बिंदुओं के पैटर्न का उपयोग करके अक्षरों, संख्याओं और विराम चिह्नों को दर्शाती है। इसे स्पर्श के माध्यम से पढ़ा जाता है और यह नेत्रहीन व्यक्तियों को पुस्तकें पढ़ने, सार्वजनिक स्थानों पर जाने और जानकारी प्राप्त करने में सक्षम बनाती है। यह प्रणाली सार्वभौमिक रूप से अनुकूल नीय है और विभिन्न भाषाओं तथा तकनीकी नोटेशनों जैसे गणित और संगीत के लिए भिन्न रूपांतर उपलब्ध हैं। इसे लिखने के लिए 'ब्रेलराइटर' नामक एक विशेष प्रकार की मशीन या स्टायलस और स्लेट का उपयोग किया जाता है। उभरे हुए बिंदुओं के समूह को 'सेल' कहा जाता है।आज दृष्टि बाधित से बचाव एवं दिव्यांगजनों के लिए जन-जागरूकता कार्यक्रम एवं समर्पण के नेत्रहीन यूनिट के बच्चोंद्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया है। सभी दिव्यांगजन काफी खुश थे एवं लुईस ब्रेल की तरह अविष्कारक बनने की इच्छा प्रकट कर रहे थे। आज के कार्यक्रम का संचालन संतोष कुमार सिन्हा एवं धन्यवाद ज्ञापन लक्ष्मीकान्त कुमार द्वारा किया गया है। आज के कार्यक्रम को सफल बनाने में अनिता कुमारी, गुड्डु कुमार,अभिजीत कुमार, रीना देवी, सोहम शेखर चौरसिया आदि का महत्वपूर्ण भूमिका रहा है।

गुरु गोविन्द सिंह जी से प्रेरणा लें ....

गुरु गोबिंद सिंह जी की जयंती

संजय गोस्वामी

संत श्री गुरु गोबिन्द सिंहजी से आज के व्यक्ति प्रेरणा लें क्योंकि आज सभी अपने अपने के स्वार्थ में लगे हैं और सिखों पर विदेश में नेता प्रतिपक्ष गलत बयान देते जो उनके जाने बगैर ही भ्रामकता आ जाती है हमें गुरु से सीखना चाहिए मैं गलत हो सकता हूँ पर गुरु नहीं जैसा सभी को मालूम है श्री गुरूगोबिंद सिंहजी भारत के महान संत और योद्धा दोनों थे वे सभी के प्रति दया के सागर थे क्योंकि जब चमकोर की लड़ाई में मात्र 40सिख वजीर खान के 10लाख सैनिकों से लड़ रहे थे तब गुरूजी ने पांच पांच की टुकड़ी बनाई और जब उनका पुत्र साहिब अजित सिंह दुश्मन से लड़ने जा रहे थे तभी एक सेवादार ने कहा कि गुरूजी ऐ आपका पुत्र है इसे ना भेजें तभी श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने कहा क्या आप सब मेरे अपने नहीं हो, गुरू गोबिंद सिंह सिक्खों के दसवें गुरु थे ।

गुरू गोविन्द सिंह की जयंती 6 जनवरी, सोमवार के दिन गुरु गोबिंद सिंह जी की जयंती मनाई जा रही है संत श्री गुरु गोबिन्द सिंहजी से आज के व्यक्ति प्रेरणा लें क्योंकि आज सभी अपने अपने के स्वार्थ में लगे हैं और सिखों पर विदेश में नेता प्रतिपक्ष गलत बयान देते जो उनके जाने बगैर ही भ्रामकता आ जाती है हमें गुरु से सीखना चाहिए मैं गलत हो सकता हूँ पर गुरु नहीं जैसा सभी को मालूम है श्री गुरूगोबिंद सिंहजी भारत के महान संत और योद्धा दोनों थे वे सभी के प्रति दया के सागर थे क्योंकि जब चमकोर की लड़ाई में मात्र 40सिख वजीर खान के 10लाख सैनिकों से लड़ रहें थे तब गुरूजी ने पांच पांच की टुकड़ी बनाई और जब उनका पुत्र साहिब अजित सिंह दुश्मन से लड़ने जा रहें थे तभी एक सेवादार ने कहा कि गुरूजी ऐ आपका पुत्र है इसे ना भेजें तभी श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने कहा क्या आप सब मेरे अपने नहीं हो, गुरू गोबिंद सिंह सिक्खों के दसवें गुरु थे । वे एक महा-शूरवीर और तेजस्वी थे। उन्होंने मुगलों के अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई थी और 'सत श्री अकाल' का नारा दिया था। उन्होंने कायरों को वीर और वीरों को सिंह बना दिया था । काल का अवतार बनकर उन्होंने शत्रुओं के छक्के छुड़ा दिए थे । इस तरह उन्होंने धर्म, जाति और राष्ट्र को नया जीवन दिया था ।गुरु जी का जन्म- गुरु गोबिन्द सिंह जी का जन्म 22 दिसम्बर, सन 1666 ई० को पटना में हुआ। इनका बचपन का नाम गोबिन्द राय रखा गया । इनके पिता नौवें गुरु श्री तेरा बहादुर जी कुछ समय बाद पंजाब लौट आए थे । परन्तु यह अपनी माता गुजरी जी के साथ आठ साल तक पटना में ही रहे । तीव्र बुद्धि- गोबिन्द राय बचपन से ही स्वाभिमानी और शूरवीर थे । घुड़सवारी करना, हथियार चलाना, साथियों की दो टोलियां बनाकर युद्ध करना तथा शत्रु को जीतने के खेल खेलते थे । वे खेल में अपने साथियों का नेतृत्व करते थे । उनकी बुद्धि बहुत तेज थी । उन्होंने आसानी से हिन्दी, संस्कृत और फारसी भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था । को बलिदान के लिए प्रेरित करना- उन दिनों औरंगजेब के अत्याचार जोरों पर थे । वह तलवार के जोर से हिन्दुओं को मुसलमान बना रहा था। कश्मीर में भी हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाया जा रहा था। भयभीत कश्मीरी ब्राह्मण गुरु तेग बहादुर जी के पास आए । उन्होंने गुरु जी से हिन्दु धर्म की रक्षा के लिए प्रार्थना की । गुरु तेग बहादुर जी ने कहा कि इस समय किसी महापुरुष के बलिदान की आवश्यकता है। पास बैठे बालक गोबिन्द राय ने कहा-पिता जी, आप से बढ़कर महापुरुष और कौन हो सकता है। ' तब गुरु तेग बहादुर जी ने- बलिदान देने का निश्चय कर लिया । वे हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए दिल्ली पहुँच गए और वहाँ धर्म की रक्षा के लिए अपना बलिदान दे दिया और गुरु तेग बहादुर जी को उनके शहीदी पर उन्हें हिन्द का चादर भी कहा जाता है क्योंकि वे कश्मिरी पंडीतों की रक्षा यानि हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए बलिदान दिया और उनके साथ दो अन्य शिष्यों ने भी बलिदान दिया जो सचमुच जुल्म के खिलाफ एक मिशाल कायम की। पिता जी की शहीदी के बाद धर्म की रक्षाके लिए गोबिन्द राय 11 नवम्बर, 1675 ई० को गुरु गद्दी पर बैठे। उन्होंने औरंगजेब के अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाई और हिन्दू धर्म की रक्षा का बीड़ा उठाया । उन्होंने गुरु परम्परा को बदल दिया । अब वे मसन्दों और अपने सेवकों से राजाओं की साज-सज्जा और युद्ध के सामान भेंट में लेने लगे । वे अपने शिष्यों को सैनिक-शिक्षा देते थे ।खालसा पंथ की स्थापना- सन 1699 में वैशाखी के दिन गुरु गोबिन्द राय जी ने आनन्दपुर साहिब में दरबार सजाया । भरी सभा में उन्होंने बलिदान के लिए पाँच सिरों की मांग की । गुरु की यह माँग सुनकर सारी सभा में सन्नाटा छा गया । फिर एक-एक करके पाँच व्यक्ति अपना बलिदान देने के लिए आगे आए । गुरु जी एक-एक करके उन्हें तम्बू में ले जाते रहे । इस प्रकार उन्होंने पाँच प्यारों का चुनाव किया । फिर उन्हें अमृत छकाया और .स्वयं भी उनसे अमृत छका । इस तरह उन्होंने अन्याय और अत्याचार का विरोध करने के लिए खालसा पंथ की स्थापना की । उन्होंने अपना नाम

गोबिंद राय से गोबिन्द सिंह रख लिया ।पहाड़ी राजाओं से युद्ध- गुरु जी की बढ़ती हुई सैनिक शक्ति को देखकर कई पहाड़ी राजे उनके शत्रु .बन गए । पाऊंटा दुर्ग के पास भंगानी के स्थान पर फतेह शाह ने गुरु जी पर आक्रमण कर दिया । सिक्ख बड़ी वीरता से लड़े । अन्त में गुरु जी विजयी रहै ।नादौन का युद्ध- जम्मू के सूबेदार मियाँ खाँ ने अपने सेनापति आलिफ खां को पहाड़ी राजा भीमचन्द से कर (टैक्स) लेने के लिए भेजा,कर देने से इकार करने पर आलिफ खाँ ने भीमचन्द पर हमला कर दिया । गुरु जी भीमचन्द की सहायता के लिए पहुंचे । आलिफ खां युद्ध में मारा गया । इसे नादौन का युद्ध कहते हैं आनन्दपुर छोड़ना- औरंगजेब ने गुरु जी की शक्ति समाप्त करने का निश्चय किया । उन्हें लाहौर और सरहिन्द के सूबेदारों को गुरु जी पर आक्रमण करने का हुक्म दिया । पहाड़ी राजा मुगलों के साथ मिल गए , उन सबने कई महीनों तक आनन्दपुर को घेरे रखा । सिक्ख इस लड़ाई से तंग आ चुके थे । औरंगजेब ने गुरु जी को पत्र लिखा किइ वे दुर्ग छोड़ दुंए उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचाई जाएगी । गुरु जी ने किला छोड़ दिया पर शत्रु सेना ने विश्वासघात किया । उसने गुरु जी पर आक्रमण कर दिया । गुरु जी को काफी हानि उठानी पड़ी ।चमकौर का युद्ध 1704 में 21, 22, और 23 दिसम्बर को गुरु गोविंद सिंह और मुगलों की सेना के बीच पंजाब के चमकौर में लड़ा गया था। गुरु गोबिंद सिंह जी 20 दिसम्बर की रात आनंद पुर साहिब छोड़ कर 21 दिसम्बर की शाम को चमकौर पहुंचे थे, और उनके पीछे मुगलों की एक विशाल सेना जिसका नेतृत्व वजीर खां कर रहा था, भी 22 दिसम्बर की सुबह तक चमकौर पहुँच गयी थी।23 दिसम्बर को गुरु गोविंद सिंह और मुगलों की सेना के बीच चमकौर में युद्ध लड़ा गया था वजीर खां गुरु गोबिंद सिंह को जीवित या मृत पकड़ना चाहता था। चमकौर के इस युद्ध में गुरु गोबिंद सिंह की सेना में केवल उनके दो बड़े साहिबजादे अजीत सिंह एवं जुझार सिंह और 40 अन्य सिंह थे। इन 43 लोगों ने मिलकर ही वजीर खां की पूरी सेना का विनाश कर दिया था ।वजीर खान किसी भी सूरत में गुरु गोविंद सिंह जी को जिंदा या मुर्दा पकड़ना चाहता था क्योंकि औरंगजेब की लाख कोशिशों के बावजूद गुरु गोविंद सिंह मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं कर रहे थे। लेकिन गुरु गोविंद सिंह के दो बेटों सहित 40 सिक्खों ने गुरूजी के आशीर्वाद और अपनी वीरता से वजीर खान को अपने मंसूबो में कामयाब नहीं होने दिया और 10 लाख मुगल सैनिक भी गुरु गोविंद सिंह जी को नहीं पकड़ पाए। यह युद्ध इतिहास में सिक्खों की वीरता और उनकी अपने धर्म के प्रति आस्था के लिए जाना जाता है नवाब वजीर खां ने माता गुजरी और दोनों छोटे साहिबजादों बाबा जोरावर सिंह और फतेह सिंह बहुत अत्याचार किए और धर्म बदलने के लिए कहा। लेकिन इन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया। उस समय बाबा जोरावर मात्र 7 और बाबा फतेहसिंह 9 साल के थे। गुस्सा होकर वजीर खान ने 26 दिसंबर 1705 को दोनों साहिबजादों को दीवार में जिंदा चुनवा दिया। जब ये बात माता गुजरी को पता चली तो उन्होंने भी अपना शरीर त्याग दिया ।गुरु गोबिंद सिंह का जन्म भारत में ऐसे समय में हुआ था जब लोग राजनीतिक रूप से विभाजित, धार्मिक रूप से पतित और आर्थिक रूप से शोषित थे। उन्होंने एक नए वैचारिक युग की शुरूआत की और अपने देश के निष्क्रिय और सुस्त लोगों को जीवन के प्रति एक सशक्त दृष्टिकोण से उत्साहित किया। हिंदू पंजाब में एक राजनीतिक शक्ति नहीं रह गए थे जो मुगलों के अत्याचारी शासन की चपेट में था। हिंदू सौम्य और विनम्र थे, और अपने विश्वास के प्रति कठोर थे और उन्हें अपने आहत सम्मान और मर्दानगी को सही ठहराने के लिए एक बहादुर भावना से ओतप्रोत होना पड़ा। पुरुषोत्तम निझावन के अनुसार, यद्यपि नानक मनुष्य और मनुष्य के बीच के सभी भेदों को मिटा रहे थे, फिर भी उन्होंने स्वयं को भारतीय जड़ों से अलग नहीं किया... जबकि इस्लाम आम तौर पर शुद्धतावादी है, हिंदू धर्म में ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें अत्यधिक तपस्या और आत्म-पीड़ा का अभ्यास किया जाता है। लेकिन दोनों को अस्वीकार करते हुए, नानक सहज योग में चले गए... और बुद्ध की तरह, उन्होंने अपने अनुयायियों के लिए जीवन का एक मजबूत नैतिक और नैतिक कोड निर्धारित किया।1 गुरु नानक और गुरु गोविंद सिंह के अन्य पूर्ववर्तियों ने हिंदुओं की नैतिकता को काफी ऊंचा किया था, लेकिन उन्हें उच्च राजनीतिक आकांक्षाओं के साथ प्रेरित करने और अपने राष्ट्र के लिए लड़ने का काम गुरु गोविंद सिंह के लिए आरक्षित था। उन्हें अपने राष्ट्र को मौजूदा शासन के राजनीतिक अत्याचार और धार्मिक असहिष्णुता के खिलाफ खड़ा करने के लिए तैयार करना था। कनिंघम कहते हैं, गुरु एक दार्शनिक थे, और पूरी तरह से समझते थे कि पुरुषों की कल्पना को कैसे प्रभावित किया जा सकता है। वे मनोविज्ञान के बारे में बहुत कुछ जानते थे। उन्होंने महसूस किया कि हिंदू स्वभाव से बहुत ही सौम्य हैं और उनमें धार्मिक विचार तो हैं, लेकिन राष्ट्रीय भावनाएँ नहीं हैं। उनके लिए राष्ट्र बनाने का एकमात्र तरीका राष्ट्रवाद को अपना धर्म बनाना था। वे जानते थे कि राष्ट्रवाद का पहला तत्व एकता है। उन्होंने धर्म को सार्वभौमिक भाईचारे के रूप में देखा और घोषणा की कि कोई भी व्यक्ति अपने आपको सच्चा सिख नहीं कह सकता, जब तक कि वह जातिगत पूर्वाग्रहों को न छोड़े

इस तरह कुछ ही दिनों में गुरु गोविंद सिंह के चारों बेटों ने देश और धर्म की राह पर चलते हुए अपनी कुबार्नी दे दी। पंजाब के मैदानों की हलचल से दूर होने के बावजूद, पौंटा और आनंदपुर दोनों ही महत्वपूर्ण व्यापार और तीर्थयात्रा मार्गों पर स्थित थे। 19 हिंदू अपने मृतकों के अवशेषों को हरिद्वार में पवित्र नदी गंगा में विसर्जित करने के लिए पौंटा में यमुना पार करते थे, और हिंदू और जैन भक्त नैना देवी और ज्वालामुखी में देवी मंदिरों और कांगड़ा में आदि नाथ मंदिर की तीर्थयात्रा करते समय आनंदपुर से गुजरते थे। ये मार्ग कश्मीर और पंजाब के बीच और इसके माध्यम से दिल्ली और यमुना और गंगा नदियों के बीच के क्षेत्र में व्यापार को भी बढ़ावा देते थेहमारे पास सत्रहवीं शताब्दी की शुरूआत में एक यूरोपीय व्यक्ति द्वारा हरिद्वार से ज्वालामुखी की यात्रा करने का विवरण है, और इस मार्ग से होने वाले अधिकांश व्यापार के अन्य संदर्भ भी हैं। इस प्रकार पौंटा और आनंदपुर के स्थानों ने सिखों को यात्रियों, उनके द्वारा लाए गए सामान और उनके निपटान में अन्य संसाधनों तक आसान पहुँच प्रदान की। पौंटा और आनंदपुर का लेआउट उस समय की सिख चिंताओं को महत्वपूर्ण तरीकों से दशार्ता है। पौंटा में, सिख प्रतिष्ठान एक पहाड़ी की चोटी पर था, जो यमुना नदी को पार करने वाले लोगों का सर्वेक्षण करता था। इस सुविधाजनक स्थान से, वे नदी पर मार्ग को नियंत्रित कर सकते थे, जबकि किसी के लिए भी उच्च ऊंचाई पर स्थित उनके आधार पर हमला करना आसान नहीं था। हमारे पास सिखों द्वारा घाट पर यातायात की निगरानी, प्रवेश और पहुँच के मुद्दों पर निर्णय लेने और सत्ता की इस स्थिति से उत्पन्न चुनौतियों के शुरूआती संदर्भ हैं। ये मुद्दे तब और अधिक ध्यान में आते हैं जब हम आनंदपुर को देखते हैं। गढ़वाल के प्रमुख के खिलाफ अपनी जीत के बाद, क्षेत्र में एक शक्तिशाली व्यक्ति जिसके पूर्वजों ने सदियों तक बनारस पर शासन किया था, गुरु पंजाब की पहाड़ियों में अपने पैतृक अधिकार की सीट पर लौट आए। आनंदपुर की स्थापना 1684 में हुई थी या 1688 में, यह पूरी तरह स्पष्ट नहीं है, लेकिन हम यह निश्चित रूप से जानते हैं कि 1690 के दशक में यह एक संपन्न शहर था। इसे घाटी के पूर्वी छोर पर पहाड़ियों पर बनाया गया था। गुरु के आवासीय क्वार्टर इसके केंद्र में थे। ये पौंटा के दिनों के उनके युद्ध-परीक्षित योद्धाओं के घरों से घिरे थे। भारत ी उच्च स्थान नामक एक स्थान का समकालीन संदर्भ है, जहाँ गुरु ने अपना दरबार लगाया था। पूरी संभावना है कि समुदाय का नाम बदलकर खालसा पंथ रखने की घोषणा यहीं से जारी की गई थी, और चूँकि उस समय से सिखों को अपने बाल (केस) बिना कटे रखने थे, इसलिए उस स्थान पर बने किले को केसगढ़ (बालों का किला) के रूप में जाना जाने लगा।

यह पश्चिमी न्यायपूर्ण युद्ध सिद्धांत में निहित विचारों के समान है। सिखों का यह भी मानना है कि संधियों और युद्ध विराम का सम्मान किया जाना चाहिए, पूजा स्थलों (किसी भी धर्म के) को नुकसान नहीं पहुँचाया जाना चाहिए, और आत्मसमर्पण करने वाले सैनिकों को नुकसान नहीं पहुँचाया जाना चाहिए। न्यायपूर्ण युद्ध सिद्धांत से महत्वपूर्ण अंतर यह है कि सिखों का मानना है कि, यदि कोई युद्ध न्यायपूर्ण है, तो उसे तब भी लड़ा जाना चाहिए, जब उसे जीता न जा सके। सिखों से उत्पीड़न के विरुद्ध सैन्य कार्रवाई करने की अपेक्षा की जाती है, और सिखों में पूर्ण शांतिवाद की कोई आधुनिक परंपरा नहीं है, हालाँकि सिख धर्मों और राज्यों के बीच मानवाधिकारों और सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए कार्रवाई के प्रबल समर्थक हैं। वर्तमान जीवन सबसे आधुनिक शिक्षा की माँग करता है। और मानवीय विज्ञान भी आजकल आमूलचूल परिवर्तन से गुजर रहे हैं, जो खुद को आधुनिक समस्याओं और सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप बदल रहे हैं। यह समझा जाता है कि भारतीय विश्वविद्यालय, कॉलेज और अन्य शैक्षणिक संस्थान हमारे युवाओं और छात्रों को हमारे देश के विकास के एक और चरण के लिए तैयार करने के लिए आगे आ रहे हैं, जो वैश्वीकरण और वैश्विक जीवन के नाम से जाना जाता है। गुरु गोबिंद सिंह का निधन 7 अक्टूबर 1708 को हुआ और उनका अंतिम संस्कार नांदिड़ में किया गया, जहां नांदिड़ साहिब गुरुद्वारा स्थित है विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकसित बुनियादी ढांचे, नई कार्य नैतिकता और नई उद्यमशीलता की भावना और धन के वितरण की संशोधित सामाजिक नीति के साथ, वास्तव में 21वीं सदी की दहलीज पर, कोई भी देश वैश्विक प्रक्रियाओं से अलग नहीं रह सकता है।

संपादकीय

खतरे की घंटी

केंद्रीय भूझजल बोर्ड.ने कहा है, देश के 440 जिलों के भूजल में नाइट्रेट की सांद्रता अनुमेय सीमा से अधिक है। नाइट्रेट संदूषण पर्यावरण व स्वास्थ्य के मद्देनजर गंभीर चिंता का विषय है। भूजल गुणवत्ता के नमूनों में फ्लोराइड़ व आर्सेनिक संदूषण भी सुरक्षित सीमा से अधिक पाया गया। नाइट्रोजन आधारित उर्वरकों व पशु अपशिष्टों का उपयोग करने वाले कृषि क्षेत्रों में मिट्टी की गहराई तक पहुंच जाता है। मानसून से पहले व बाद में पंद्रह हजार से ज्यादा गुणवत्ता मांपने के नमूने लिये गए थे। राजस्थान, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र व मप्र के नमूनों में उच्च संदूषण था, जबकि उप्र, केरल, झारखंड़ व बिहार में कम प्रतिशत था। उच्च नाइट्रेट स्तर शिशुओं में ब्लू बेबी सिंड्रोम जैसी स्वास्थ्य समस्याएं पैदा करता है। फ्लोराइड़ और आर्सेनिक प्रदूषकों के संपर्क में लंबे समय तक रहने वालों की सेहत पर गंभीर परिणाम हो सकते हैं, जिसमें कैंसर व त्वचा के गहरे घाव शामिल हैं। राजस्थान व पंजाब के नमूनों में यूरेनियम की मात्रा अधिक पायी गई, जिसके संपर्क से गुर्दे की क्षति हो सकती है। भूजल में ये विषाक्तता रोकने के तत्काल प्रयास किए जाने जरूरी हैं। जल से होने वाले संक्रमणों व कैंसर तथा गुर्दे के गंभीर रोगों की चपेट में आने वालों या इनके चलते अल्पायु में ही मौत की बढ़ती संख्या को देखते हुए सरकार को फौरन चेत जाना चाहिए। अभी भी देश के प्रत्येक नागरिक को शुद्ध जल मुहैया करवाने के प्रति सरकार तनिक भी जागरूक नहीं है। विश्व स्वास्थ संगठन के अनुसार लगभग अस्सी फीसद रोगों का कारण जल है। पर्यावरण प्रदूषण का असर जल पर भी पड़ता है। औद्योगिकीकरण तथा अपशिष्टों का उचित निपटान न होने से भूमि व जल दोनों ही बुरी तरह प्रभावित होते हैं।

चिंतन-मनन

माँ है तो सबकुछ है

माँ एक गुरु के रूप में अपनी संतान को संस्कार देती है। माता जीवन का निर्माण करती है, तो पिता उसे उन्नति के शिखर तक ले जाता है। माँ है तो सबकुछ है और यदि माँ नहीं तो कुछ भी नहीं। जो अपनी माँ को प्रसन्न रखता है, वह उसके आशीर्वाद का वरदान भी पाता है। ऐसी परम उपकारी वात्सल्य मूर्ति माँ की आँखों में कभी आँसू नहीं आने देना। जो विनयपूर्वक परमात्मा और सद्गुरु के चरणों में समर्पित हो जाता है, वह सबकुछ पा जाता है। सद्गुरु हमें ज्ञान देते हैं। सद्गुरुरूपी नाविक के साथ धर्मरूपी नौका में बैठकर इंसान संसार सागर को पार कर लेता है। आज व्यक्ति धन-वैभव का अहंकार करता है, परंतु वह अंत में धराशायी हो जाता है। जिसके जीवन में विनय का गुण है, वह ज्ञान प्राप्त कर सकता है। माँ एक गुरु के रूप में अपनी संतान को संस्कार देती है। माता जीवन का निर्माण करती है, तो पिता उसे उन्नति के शिखर तक ले जाता है। माँ है तो सबकुछ है और यदि माँ नहीं तो कुछ भी नहीं।

नफरत की इंतिहा: कहाँ गई शीर्ष नेताओं की नसीहतें

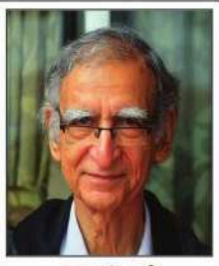

राम पुनियानी

अपने गठन के बाद से ही आरएसएस ऐसी अनेक संस्थाओं का निर्माण करता आया है जो हिंदुत्व या हिन्दू राष्ट्रवाद की उसकी विचारधारा को आगे बढ़ाने का काम करती हैं। हिंदुत्व की अवधारणा आर्य नस्ल, ब्राह्मणवादी मूल्यों और सिन्धु नदी से लेकर समुद्र तक की भूमि के आर्यावर्त होने पर आधारित है। आरएसएस ने जिन संगठनों और संस्थाओं को जन्म दिया है, उनकी संख्या 100 से ज्यादा है। इसके अलावा अनेक ऐसे संगठन हैं जो भले ही औपचारिक रूप से संघ परिवार के सदस्य न हों, मगर वे उसकी विचारधारा में रचे-बसे हैं। इनमें साधु-संतों के अनेक संगठनों व गौरक्षकों के समूहों सहित ऐसे अनेक गिरोह शामिल हैं जो हिन्दू धर्म के नाम पर हिंसा करने के मौकों की तलाश में रहते हैं। अब ऐसे कई संगठन अस्तित्व में आ चुके हैं जो अत्यंत आक्रामक हैं और जो आरएसएस द्वारा उसके अनुयायियों के लिए निर्धारित लक्ष्मणरेखा को पार करने में तनिक भी संकोच नहीं करते।

गौरक्षकों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि गाय के नाम पर मनुष्यों की हत्या स्वीकार्य नहीं है। उनके इस वक्तव्य के कुछ ही घंटे बाद, इसी मुद्दे पर एक मुसलमान को मौत की घाट उतार दिया गया। इसी तर्ज पर, प्रधानमंत्री ने क्रिसमस की पूर्वसंध्या पर कहा कि ह्लप्रेम, सौहार्द और भाईचारा, ईसा मसीह के शिक्षाओं का केन्द्रीय तत्व हैं।ह्व उन्होंने लोगों का आव्हान किया कि वे इन मूल्यों को मजबूती दें। इसके कुछ ही दिन बाद, बजरंग दल के सदस्यों और हिन्दू धर्म के अन्य स्व-नियुक्त ठेकेदारों ने अहमदाबाद में सांता क्लॉस के भेष में उपहार बाँट रहे एक व्यक्ति पर हमला किया। सोशल मीडिया पर वायरल एक वीडियो में दिखाया गया है कि अहमदाबाद के कांकरिया कार्निवल में सांता क्लॉस की वेशभूषा पहने दो लोगों की गुंडों ने जबरदस्त पिटाई की। यह शायद पहली बार है कि सांता क्लॉस का भेष धरे लोगों पर हमले हो रहे हैं।

इसके पहले कैरोल गायकों पर हमले हो चुके हैं। भाजपा के सत्ता में आने के बाद से राष्ट्रपति भवन में कैरोल गायन की परंपरा बंद कर दी गई है। बजरंग दल हिन्दुओं को क्रिसमस पार्टियों में भाग न लेने की चेतावनियाँ जारी कर चुका है। इस बार क्रिसमस पर ये सब हरकतें कुछ कम क्यों हुईं?

हाल में हमने हर मस्जिद के नीचे मंदिर खोजने के अभियान का आगाज भी देखा है, जो बाबरी मस्जिद को ढहाए जाने की याद दिलाता है। इस तरह के काल्पनिक दावों के ज्वार के बाद आरएसएस के मुखिया मोहन भागवत ने भी कहा कि हमें हर मस्जिद के नीचे शिवलिंग खोजने के प्रयास बंद करने चाहिए। यह सचमुच आश्चर्यजनक है कि काशी में फव्वारे-जैसे एक ढांचे को शिवलिंग बताया जा रहा है और मस्जिद को मंदिर में बदलने की मांग हो रही है। उत्तरप्रदेश के संभल में ऐसे ही दावों के बाद हिंसा हो चुकी है।

शायद इस सब ने देश की सबसे बड़ी राजनैतिक संस्था के शीर्ष नेता को झकझोर दिया है। या फिर शायद उन्हें यह लग रहा है कि इससे संघ परिवार की छवि खराब होगी। इसलिए उन्होंने एक ऐसा आव्हान किया जो समझदारीपूर्ण लगता है। उन्होंने कहा कि ह्लअयोध्या के राममंदिर का सम्बन्ध आस्था से था और हिन्दू इस मंदिर का निर्माण चाहते थे। मगर सिर्फ नफरत के कारण नए स्थानों के बारे में विवाद खड़े करना अस्वीकार्य है।ह्व उन्होंने यह भी जोड़ा कि ह्लकुछ लोग समझते हैं कि नए विवाद खड़े कर वे हिन्दुओं के नेता बन सकते हैं। इसकी इजाजत कैसे दी जा सकती है।ह्व

मगर इसके बाद एक चमत्कार हुआ। हिंदुत्व की राजनीति से जुड़े कई संगठनों ने भागवत की इस समझाईश का विरोध किया। हम सब जानते हैं कि आरएसएस में सख्त अनुशासन होता है और उसके सदस्य कभी अपने शीर्ष नेता के आदेशों का उल्लंघन नहीं करते। तो फिर यह कैसे हो रहा है कि दर्जनों सेनाएं और धर्म संसदें भागवत की अपील के खिलाफ बात और काम कर रही हैं?

इससे भी बड़ी बात यह है कि आरएसएस के अनाधिकारिक मुखपत्र ह्यआगेर्नाइजरह्ण ने भी अतिवादियों की मांग का समर्थन करते हुए लिखा कि, ह्लमंदिरों की पुनर्स्थापना, हमारी पहचान की खोज है।ह्व (द टाइम्स ऑफ इंडिया, दिसम्बर 27, 2024)। उसने यह भी लिखा कि मंदिरों की पुनर्स्थापना का उद्देश्य हमारी राष्ट्रीय पहचान स्थापित करना और सभ्यतागत न्याय हासिल करना है।

क्या नफरत सचमुच इतनी गहरी है कि अनुयायी अपने नेताओं की बात भी नहीं सुन रहे हैं? या क्या नरेन्द्र मोदी जैसे नेता चाहते हैं कि नफरत भड़काने वाली हरकतें होती रहें क्योंकि इनसे उनकी राजनीति को मजबूती मिलती है? अगर ऐसा नहीं है तो हिंसा करने वालों के खिलाफ कार्यवाही क्यों नहीं होती? क्या कारण है कि कानून और व्यवस्था बनाये रखने वाली मशीनरी से लेकर कुछ हद तक न्यायपालिका तक का उन तत्वों के प्रति नर्म रुख है जो नफरत फैलाते हैं और हिंसा करते हैं?

बाबरी मस्जिद को जमीदोज करने वालों के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं हुई। गाय और गौमांस के नाम पर लिंचिंग करने वाले खुले घूम रहे हैं। लव-जिहाद के नाम पर हत्याएं और हमले करने वालों का बाल भी बांका नहीं हुआ है। जाहिर है कि ऐसे तत्वों को यह पता है कि वे आसानी से कानून तोड़ सकते हैं। वे जानते हैं कि कानून को तोड़मरोड़ कर उनका बचाव किया जाएगा।

ह्यआगेर्नाइजरह्ण द्वारा भागवत का विरोध मन में एक जिज्ञासा पैदा करता है। क्या आरएसएस विभाजित हो गया है? यह कैसे हो रहा है कि भागवत शांति और सौहार्द की बात कर रहे हैं और ह्यआगेर्नाइजरह्ण के कर्ताधर्ता चाहते हैं कि नफरत और हिंसा की राह पर तेजी से आगे बढ़ा जाए?

एक और पहलू को समझने की जरुरत है। जब इस तरह की सोच को राजनैतिक लाभ के लिए बढ़ावा दिया जाता है और इससे चुनावों में फायदा होता है तो शुरूआत में तो नेताओं को खुशी होती है। मगर फिर, जो बीज नेताओं ने बोये होते हैं, उनसे कई नए तत्व ऊग आते हैं और जैसा कि भागवत ने कहा, उनमें से कुछ राजनैतिक पद और प्रभाव हासिल करने की जद्दोजहद में जुट जाते हैं। हम सबको याद है कि जिस समय बाबरी मस्जिद गिराई जा रही थी, वरिष्ठ आरएसएस नेता के। सुदर्शन, जो आगे चल कर आरएसएस के मुखिया बने, मंच पर थे। इस अपराध की किसी को कोई सजा नहीं मिली। बाबरी मस्जिद के ढहाने वालों को निरपराध घोषित कर दिया गया और यह फैसला देने वाले जज को रिटायरमेंट के बाद एक महत्वपूर्ण पद मिला। एक पुरानी कहावत है कि ह्यजैसे बोओगे, वैसा काटोगे।ह्ण बाबरी मस्जिद की पूरी कथा से यह साफ है कि मंदिरों को तोड़ने के झूठे नैरेटिव फैलाने के अलावा, मुसलमानों के बारे में अनेक मिथक भी फैलाए गए। नतीजा हम सबके सामने है। आरएसएस के मुखिया की बात अब उनके ही समर्थक और अनुयायी सुनने को तैयार नहीं हैं। इसके अलावा, ईसाईयों के बारे में भी दशकों से यह प्रचार किया जा रहा है कि वे जोर-जबरदस्ती, धोखेबाजी और लोभ-लालच के जरिये धर्मपरिवर्तन करवा रहे हैं। मोदी, भागवत और उनके जैसे अन्यों को यह समझ में आ रहा होगा कि जिन्न को बोतल से निकलना आसान है। उसे फिर से बोतल में बंद करना मुश्किल है।

(अंग्रेजी से रूपांतरण अमरीश हरदेनिया। लेखक आईआईटी मुंबई में पढ़ाते थे और सन 2007 के नेशनल कम्यूनल हामोर्नी एवार्ड से सम्मानित हैं)

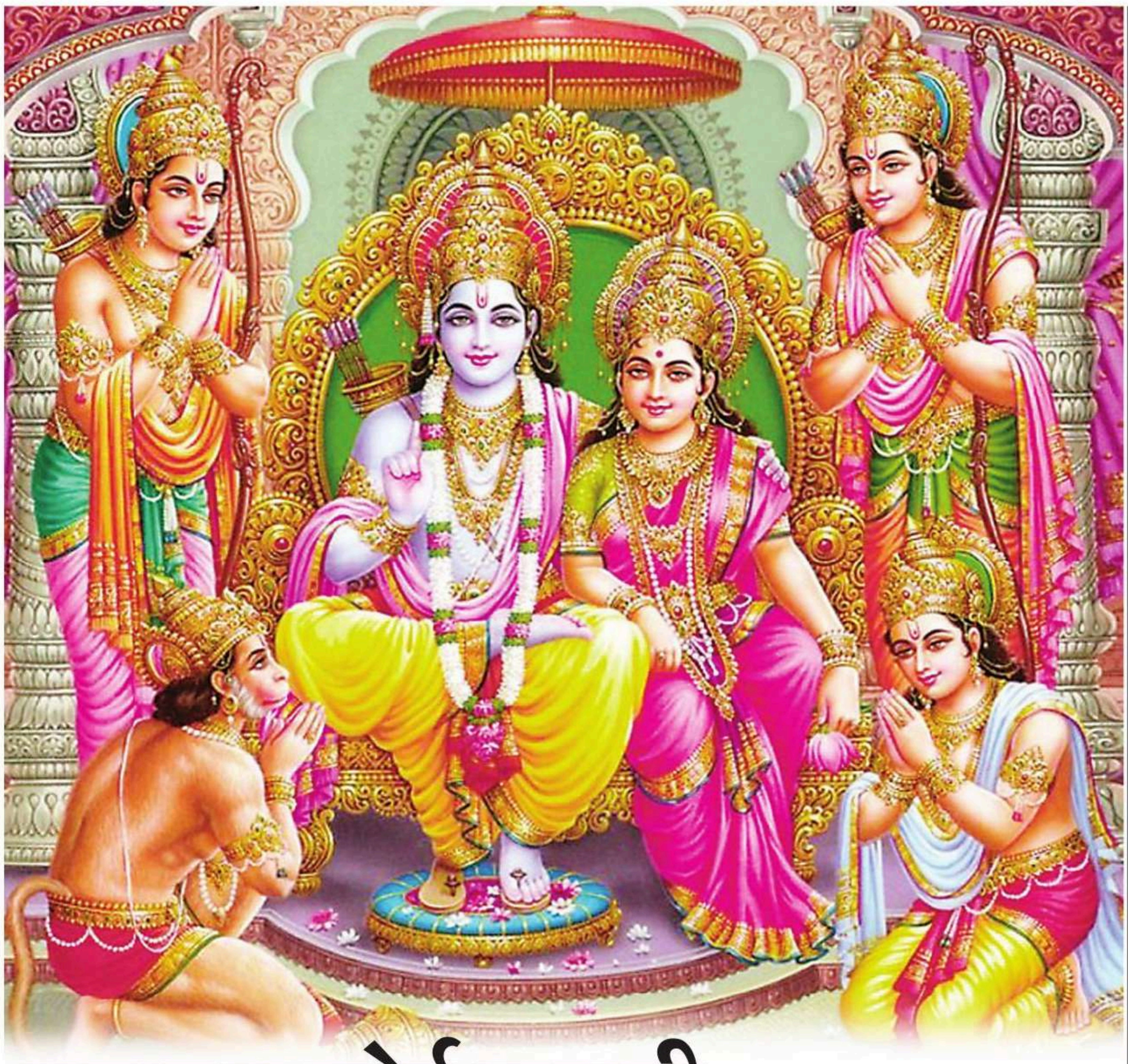

रामायण कोई कहानी नहीं इतिहास है

रामायण एक आध्यात्म से जुड़ा इतिहास है इसमें भारतीय संस्कृति के अद्भुत गुण देखने को मिलते हैं और कहीं-कहीं आश्चर्यचकित कर देने वाली घटनाओं का वर्णन किया गया है।
रामायण में वर्णित रावण द्वारा श्रीलंका जाते समय पुष्पक विमान का मार्ग, उस मार्ग में कौन सा वैज्ञानिक रहस्य छिपा है। रावण ने पंचवटी (नासिक, महाराष्ट्र) से सीता का अपहरण किया और हम्पी (कर्नाटक), लेपाक्षी (आंध्र प्रदेश) के माध्यम से श्रीलंका पहुंचा। आश्चर्य होता है जब हम आधुनिक तकनीक से देखते हैं कि नासिक, हम्पी, लेपाक्षी और श्रीलंका एक सीधी रेखा में हैं। यह पंचवटी से श्रीलंका तक का सबसे छोटा मार्ग है। अब आप सोचते हैं कि उस समय कोई क्ष्धधद्द्यद्व मैप नहीं था जो सबसे छोटा रास्ता बताता हो। फिर, उस समय यह कैसे पता चला कि सबसे छोटा और सीधा मार्ग कौन सा है? या भारत के विरोधियों की संतुष्टि के लिए भी, मान लें कि रामायण केवल एक महाकाव्य है, जिसे वाल्मीकि ने लिखा था, तो मुझे बताएं कि उस समय भी कोई मानचित्र नहीं था, वाल्मीकि, जिन्होंने रामायण लिखा था, कैसे आए थे? पता है कि पंचवटी से श्रीलंका शॉर्ट कट है? वाल्मीकि ने सीता हरण के लिए केवल उन्हीं स्थानों का उल्लेख किया है, जो पुष्पक विमान का सबसे छोटा और सबसे सीधा मार्ग था। यह ठीक उसी तरह है जैसे 500 साल पहले गोस्वामी तुलसीदास जी को पता था कि पृथ्वी से सूर्य की दूरी कितनी है? (जुग सहस्त्र योजन पर भानु= 152 मिलियन किमी - हनुमानचालीसा), जबकि नासा ने इस दूरी का पता कुछ साल पहले ही लगाया था।
पंचवटी वह स्थान है जहां श्री राम, सीता और लक्ष्मण वनवास के दौरान रहे थे। यहीं पर शूर्पणखा आई और लक्ष्मण से शादी करने के लिए उपद्रव करने लगी। लक्ष्मण को शूर्पनखा की नाक काटने के लिए मजबूर किया गया था, अर्थात हम आज इस स्थान को नासिक (महाराष्ट्र) के रूप में जानते हैं। पुष्पक विमान में, सीता ने नीचे देखा और देखा कि एक पहाड़ की चोटी पर बैठे कुछ बंदर जिज्ञासा से ऊपर की ओर देख रहे थे, सीता ने अपने वस्त्र के कोर को फाड़ दिया और अपने कंगन बांध दिए और राम को ढूंढने में मदद करने के लिए उन्हें नीचे फेंक दिया। जिस स्थान पर सीता ने इन आभूषणों को वानरों के लिए फेंका था, वह 'ऋष्यमुक पर्वत' था जो हम्पी (कर्नाटक) में वर्तमान में स्थित है। इसके बाद, वृद्ध जटायु ने रोते हुए सीता को देखा, देखा कि एक दानव एक महिला को जबरन अपने विमान में ले जा रहा था। सीता को मुक्त करने के लिए जटायु ने रावण से युद्ध किया। रावण ने जटायु के पंखों को तलवार से काट दिया। इसके बाद, जब राम और लक्ष्मण सीता को खोजने के लिए पहुंचे, तो उन्होंने पहला पता दिया कि उस स्थान का नाम 'लेपाक्षी' (आंध्र प्रदेश) है।
यह महर्षि वाल्मीकि द्वारा लिखित एक सच्चा इतिहास है। जिसके सभी वैज्ञानिक प्रमाण आज उपलब्ध हैं। इसीलिए जब भी कोई वामपंथी हमारे इतिहास, संस्कृति, साहित्य को पौराणिक कथा कहकर या खुद को विद्वान बताकर लोगों को भ्रमित करने की कोशिश करता है, तो उसे पकड़कर उससे इन सवालों के जवाब मांगे। यकीन मानिए आप एक भी जवाब नहीं दे पाएंगे। इस सब में आपकी जिम्मेदारी कहां है? आपके हिस्से की जिम्मेदारी यह है कि जब आप टीवी पर रामायण देखते हैं, तो यह मत सोचिए कि कहानी चल रही है, बल्कि यह भी ध्यान रखें कि यह हमारा इतिहास है। इस दृष्टि से रामायण को देखें और समझें। इसके अलावा, हमारे बच्चों को यह दृष्टि देना आवश्यक है, यह कहते हुए कि बच्चों के लिए यह एक कहानी नहीं है, यह हमारा इतिहास है।

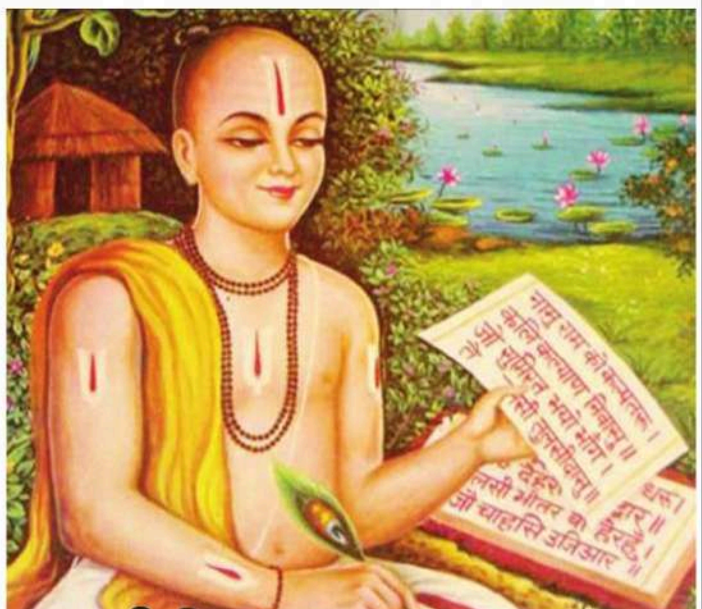

बर्बादी का रास्ता क्रोध
रामचरितमानस मे भी है जिक्र

आजकल देखा जाता है कि किसी को कभी भी बहुत जल्दी क्रोध आ जाता है। जोकि सही नहीं हैं। क्रोध के दुष्प्रभाव जीवन पर काफी बुरा पड़ता हैं। इसकी वजह से जीवन तक बर्बाद हो सकता है। कई बार गुस्से के कारण बना बनाया काम खराब हो जाता है। व्यक्ति में क्रोध आ जाए तो उसे सबसे दूर कर देता है और इंसान बिलकुल अकेला रह जाता है। तो साथ ही बता दें कि सबसे बड़े हिंदू ग्रंथ में भी इस बात का जिक्र है कि कोध्र व्यक्ति के लिए अच्छा नहीं है, क्रोध व्यक्ति के विनाश का कारण बनता है। तो आइए आपको बताते है क्रोध को लेकर रामचरितमानस मे क्या कहा गया है-
क्रुद्ध: पापं न कुर्यात क: कृद्धो हन्यात गुरूनपि ।
क्रुद्ध: परुषया वाचा नर: साधूनधिक्षिपेत
क: क्रुद्ध: पापं न कुर्यात, क्रृद्ध: गुरून अपि हन्यात,
क्रुद्ध: नर: परुषया वाचा साधन अधिक्षिपेत ।
तुलसीदास जी ने कहा है कि जो व्यक्ति क्रोध करता है उस व्यक्ति पापकर्म अधिक करना पड़ता है। पुण्य वाले काम करने से वो काफी दूर रहता है। क्रोध में ही व्यक्ति बड़े छोटे का लिहाज नहीं करता और बड़े एवं पूज्य जनों तक को मार डालता है। साथ ही ऐसा व्यक्ति अशब्दों का अधिक उपयोग करता है और साधुजनों की भी कोई इज्जत नहीं करता। अगर व्यक्ति अपने क्रोध पर काबू नहीं पाता तो वो व्यक्ति अपने आपको बर्बाद कर देगा। क्रोध स्वास्थ्य पर भी काफी हद तक नुकसान पहुचता है। विज्ञान के अनुसार अधिक क्रोध करने से ब्लड प्रेशर काफी हद तक बढ़ जाता है। क्रोध से मनुष्य को मानसिक परेशानियां हो जाती है। क्रोध मनुष्य के जीवन को अस्त व्यस्त कर देता है। क्रोध के कारण रिश्तों में कड़वाहट आने लग जाती है। गुस्से में बोला गया हर एक शब्द सांप के जहर जैसा जहरीला होता है।

आर्थिक समस्या को दूर करने के लिए करें ये उपाय

घर में सुख सम्रद्धि धन के लिए वास्तु को बहुत खास माना जाता हैं। वास्तुशास्त्र के अनुसार वास्तु के उपायों को करने से घर में सकारात्मकता ऊर्जा प्रवेश करती है जबकि नकारात्मकता ऊर्जा दूर हो जाती है। साथ ही ऐसा माना जाता है कि वास्तुदोषों के कारण जीवन में कई तरह की समस्याएं आने लगती हैं जिससे मनुष्य के बनते काम बिगड़ने लगते है। काम में रूकावट आने लगती है। तो आज हम आपको बताने जा रहे है। ऐसे उपाय जिससे आपके सभी कार्य आसानी से हो जाएंगे और जीवन से सभी परेशानियां दूर हो जाएंगी। साथ ही धन संबंधी समस्या से भी मुक्ति मिल जाएगी। मनी प्लांट-घर में वास्तुशास्त्र के अनुसार मनी प्लांट में रखने से अनेक फायदे होते हैं। घर में मनी प्लांट रखने से घर की सारी नकारात्मकता ऊर्जा शक्ति दूर हो जाती है और घर का वातावारण सकारात्मक माहौल बनने लगता है। मनी प्लांट को घर में लाने से रूपए पैसे की समस्याएं भी दूर होने लगती हैं। लेकिन इसके साथ ही कुछ ऐसी बातें भी है जो ध्यान में रखना जरूरी है।
मनी प्लांट की दिशा- वास्तुशास्त्र के अनुसार घर में मनी प्लांट लाने के बाद उसे दक्षिण या पूर्व दिशा में रखना चाहिए। इस दिशा में रखा मनी प्लांट घर के वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश कराता है। साथ ही मान्याताओं के अनुसार इस दिशा का कारक शुक्र ग्रह है और शुक्र ही बेल वाले पौधों का कारक भी कहा जाता है, इसलिए इस दिशा में मनी प्लांट लगाना बहुत शुभ माना जाता है।
पानी में रखें- वास्तुशास्त्र के अनुसार मनी प्लांट को पानी में रखना शुभ माना जाता है। साथ ही इस बात का खास ध्यान रखें कि पौधे का पानी बदलते रहे,समय-समय पर।
बेल को जमीन पर न आने दें -वास्तुशास्त्र के घर में लगाए मनी प्लांट को जमीन पर न फैलने दें, इसकी बेल को ऊपर की ओर बढ़ने देना चाहिए। वो शुभ होता है।
खराब पत्ते- वास्तुशास्त्र के अनुसार मनी प्लांट को हमेशा हरे पत्तों के साथ हरा- भरा रहना शुभ माना जाता है। अगर इसके पत्ते खराब हो रहे हैं, तो उन्हें तुरंत हटा दें।

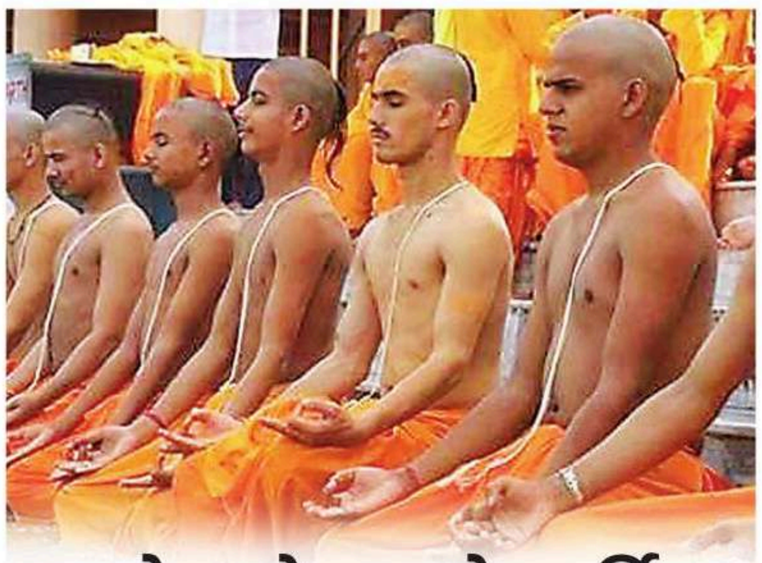

जनेऊ के जाने धार्मिक और वैज्ञानिक महत्व

हिंदू धार्मिक शास्त्रों में जनेऊ को बहुत पवित्र माना जाता है। साथ ही यज्ञोपवीत संस्कार का बहुत अधिक महत्व दिया जाता है। बता दें कि जनेऊ संस्कार हिन्दू धर्म के प्रमुख 24 संस्कारों में से एक है। यह जनेऊ 'उपनयन संस्कार' के अंतर्गत आता है। तो वहीं हिंदू धर्म के अनुसार ये हर हिन्दू का कर्तव्य है कि, वो जनेऊ धारण करें और उसके नियमों का पालन करें। जनेऊ धारण करने के बाद ही द्विज बालक को यज्ञ तथा स्वाध्याय करने का अधिकार प्राप्त होता है।

क्या होता है जनेऊ

जेसूऊ सूत से बना एक पवित्र धागा होता है। जिसे मनुष्य बाएं कंधे के ऊपर और दाईं भुजा के नीचे पहनता है। इस जनेऊ के कई वैज्ञानिक महत्व भी है। तो आइए आपको बताते है जनेऊ के वैज्ञानिक महत्व और फायदों के बारे में
स्मरण शक्ति बेहतर- हर रोज जनेऊ कान पर रखने से स्मरण शक्ति बेहतर होती है। कान पर जेनऊ इसलिए कहा जाता है क्योंकि कान दबाव पड़ने से दिमाग की वे नसें खुल जाती हैं, जिनका संबंध स्मरण शक्ति से होता है।
रक्तचाप नियंत्रण- शौच के समय जनेऊ कान के पास रखने से जो नसें दबती हैं, उनसे रक्तचाप नियंत्रण में रहता है एक स्टेडी के मुताबिक ये बात सामने आई है कि शौच के समय जनेऊ कान के पास रखने का भी वैज्ञानिक आधार है, जैसा बताया गया है कि ऐसा करने से रक्तचाप नियंत्रण में रहता है।
हृदय रोग और ब्लडप्रेशर की परेशानी दूर- इस स्टेडी में ये बात भी सामने आई है कि जनेऊ पहनने वाले लोगों को हृदय रोग और ब्लडप्रेशर जैसी परेशानी खत्म हो जाती है। जनेऊ से शरीर में खून का प्रवाह सही तरीके से होता रहता है। आध्यात्मिक ही नहीं इसका वैज्ञानिक आधार भी है, जैसे रिसर्च के अनुसार बताया गया है कि जनेऊ पहनने से हृदय रोग और ब्लडप्रेशर जैसी सारी परेशानी समाप्त हो जाती है।

काला धागे बांधने के हैं फायदे बहुत

अक्सर देखा जाता हैं की घर में बच्चा जब जन्म लेता हैं तब बड़े बुजुर्ग उससे काला टीका, काला धागा लगाते पहनाते हैं। लेकिन क्या आपको पता है काला धागा बांधने से कई अद्भुत फायदे भी होते है। बता दें कि ज्योतिष विज्ञान एवं लाल किताब के अनुसार काला धागे को विशेष स्थान दिया गया हैं। इन दोनों में इसे बाधंने को लेकर भी बात कहीं गई है। इसके अलावा ऐसा भी माना जाता है कि काले धागे को बांधने से सारी नकारात्मक ऊर्जा खत्म होती है और कई अन्य फायदें भी होते है। लेकिन इन सब में एक बात का खास ध्यान रखा जाना चाहिए कि काले धागे को शरीर में पहनने से पहले क्या-क्या सावधानी बरतें।

काला धागा बांधने के फायदे

काले धागें को बांधने से व्यक्ति को किसी की बुरी नजर नहीं लगती है। साथ ही ये काली शक्तियों से भी रक्षा करता हैं। शनिदेव का संबंध भी काले रंग से ही है। शनि को काले रंग का कारक माना जाता है। इसके अलावा काले रंग का धागा पहनने से व्यक्ति की कुडली का शनि मजबूत होता है और शनि प्रदोष से भी मुक्ति मिलती है।

आर्थिक लाभ

संकटमोचन हनुमान के दिन यानी मंगलवार को काला धागा धारण करना काफी शुभ माना जाता है। इस दिन काला धागा पहनने से आर्थिक जीवन सुखी होता है। घर में धन-समृद्धि का आगमन होता है। इस दिन खासकर दाहिने पैर में काला धागा बांधना शुभ माना जाता है।

सेहत के लिए फायदेमंद

सेहत के लिहाज से भी काला धागा काफी फायदेमंद है। अगर आपके पेट में दर्द रहता है तो व्यक्ति को अपने पैर के अंगूठे में इस धागे को बांध लेना चाहिए। इसके अलावा जिन लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होती है उनके लिए भी काला धागा काफी फायदेमंद है। इसे व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है।

काला धागा पहनने से पहले बरतें ये सावधानियां

काले धागे को अभिमंत्रित करने के बाद ही धारण करें।
धारण करने से पहले इस बारे में किसी योग्य ज्योतिष की सलाह ले।
इस धागें को बांधने वाले व्यक्ति को रुद्र गायत्री मंत्र का जाप करना चाहिए।
मंत्र - ऊँ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्र: प्रचोदयात
शरीर के जिस हिस्से में काला धागा बांध रहे हैं वहां कोई ओर अन्य रंग का धागा न धारण करें। शनिवार के दिन काला धागा बांधना शुभ होता है।

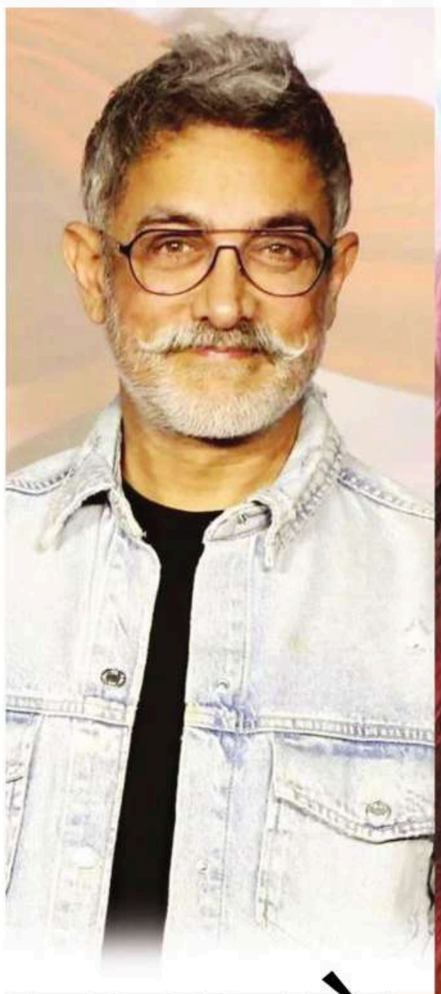

पुष्पराज के अभिनय के मुरीद हुए आमिर

अल्लू अर्जुन की पुष्पा 2 तमाम विवादों के बाद भी बॉक्स ऑफिस पर ब्लॉकबस्टर रही है। सोशल मीडिया पर कोई फिल्म की और अभिनेता की जमकर तारीफ कर रहा है। अब इस क्रम में अभिनेता आमिर खान भी आ गए हैं। अभिनेता आमिर खान के प्रोडक्शन हाउस ने अल्लू अर्जुन अभिनीत पुष्पा 2-द रूल की टीम को इसकी सफलता के लिए बधाई दी। हाल ही में एक्स पर आमिर खान प्रोडक्शन ने एक छोटा और प्यारा नोट लिखा। आइए जानते हैं कि उन्होंने क्या लिखा है।

आमिर की टीम ने दी बधाई

आमिर की टीम ने लिखा, पुष्पा 2-द रूल की पूरी टीम को फिल्म की ब्लॉकबस्टर सफलता के लिए हमारी ओर से बहुत-बहुत बधाई! आपके निरंतर सफलता की कामना करते हैं। पूरी टीम के ढेर सारा प्यार और फिर से बधाई। आमिर की टीम के इस संदेश के बाद यह कहना बिल्कुल भी गलत नहीं होगा कि अल्लू अर्जुन की पुष्पा 2 का दीवाना बॉलीवुड भी हो रहा है।

अल्लू अर्जुन ने भी दिया जवाब

आमिर की टीम के इस पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए अल्लू अर्जुन ने ट्वीट किया, आपकी शुभकामनाओं के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। चक्रकी पूरी टीम को हार्दिक शुभकामनाएं। फैंस को सोशल मीडिया पर आमिर और अल्लू अर्जुन की यह केमिस्ट्री काफी पसंद आ रही है। एक यूजर ने लिखा, जब एक अभिनेता दूसरे अभिनेता की सराहना करता है तो सच में काफी अच्छा लगता है। दूसरे यूजर ने लिखा, अल्लू अर्जुन ने कितने सम्मान के साथ आमिर की टीम को रिप्लाई किया है।

बॉक्स ऑफिस पर कायम है फिल्म का दबदबा

बात करें पुष्पा 2 की तो अल्लू अर्जुन ने बॉक्स ऑफिस पर अपना दबदबा कायम किया हुआ है। फिल्म ने सिर्फ 25 दिनों में 1760 करोड़ रुपये की कमाई की है। माइथ्री मूवी मेकर्स ने इंस्टाग्राम पर पोस्ट शेयर कर इस बात की जानकारी दी है। अल्लू अर्जुन के शानदार अभिनय के साथ-साथ कलाकारों और क्रू के शानदार प्रयासों की लोगों ने खूब तारीफ की है।

वरुण धवन की बात पर कीर्ति सुरेश ने दी प्रतिक्रिया

बेबी जॉन फिल्म में फेम कीर्ति सुरेश ने वरुण धवन के साथ फिल्म की है। इस फिल्म में कीर्ति को पसंद किया जा रहा है। कीर्ति ने हाल ही में एंटनी थाटिल के साथ शादी की। वे शादी से पहले 15 साल तक रिलेशनशिप में रहे थे। उन्होंने बेबी जॉन फिल्म में अपने सह-कलाकार वरुण धवन के बयान पर प्रतिक्रिया दी है।

कीर्ति सुरेश ने कही ये बात

गलाता इंडिया के साथ इंटरव्यू को लेकर कीर्ति सुरेश ने कहा कि कई पुरुष अभिनेताओं ने उनसे उनका नंबर मांगा, लेकिन उन्होंने उन्हें नंबर नहीं दिया क्योंकि उन्हें पता था कि वह सिंगल नहीं हैं। वरुण धवन को लेकर कीर्ति सुरेश ने कहा कि काश उन्होंने मुझे बताया होता। मैं यह पहली बार सुन रही हूं। उन्होंने मुझे कभी नहीं बताया।

प्राइवेसी रखना पसंद करती हैं कीर्ति

कीर्ति ने कहा, किसी को नहीं पता था। सिर्फ बहुत करीबी दोस्तों को ही पता था और इंडस्ट्री में भी, सामंथा को पता था। जगदीश शुरू से ही हमारे सफर का हिस्सा रहे हैं। एटली और प्रिया जानते थे, विजय सर जानते थेज हम दोनों राज रखने में बहुत अच्छे हैं। दरअसल, हम अप्रैल 2022 से ही इस शादी की योजना बना रहे हैं। मुझे लगा कि यह बहुत पहले ही सामने आ जाएगी। हम दोनों को अपनी

प्राइवेसी पसंद है और वे थोड़े शर्मीले भी हैं। हम हाथ पकड़कर नहीं घूमते। इतने सालों से यही चल रहा है।

कीर्ति सुरेश ने कही ये बात

कीर्ति सुरेश ने कहा, वे इस मामलों में नहीं पड़ना चाहती हैं। उन्होंने कहा कि वे इससे पहले हमेशा ग्रुप में ही घूमें हैं। ऐसा पहली बार हुआ कि दोनों एक कपल के तौर पर साथ में विदेश ट्रिप पर गए। कीर्ति ने कहा उन्हें अपने आप पर गर्व है कि वे लंबे समय तक अपने रिश्ते को निजी रख सकीं।

ओटीटी वर्सेज थिएटर की बहस में बोलीं प्रियंका चोपड़ा

बॉलीवुड से हॉलीवुड का सफर तय कर चुकीं अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा की दीवानगी दुनियाभर में है। हाल ही में, अभिनेत्री ने ओटीटी वर्सेज थिएटर की बहस पर अपनी राय दी है और थिएयर में फिल्में देखने के अनुभव को काफी अलग बताया है। आइए जानते हैं कि अभिनेत्री ने क्या कहा है। हाल ही में, एक साक्षात्कार में देसी गर्ल ने कहा, मुझे लगता है कि ओटीटी और थिएटर दोनों के अपने अलग मायने हैं और दोनों ही काफी अच्छे भी है। हम एक ऐसे समय में रह रहे हैं, जब हम 24 घंटे, 7 दिन और रात हर संभव तरीके से मनोरंजन तक पहुंच सकते हैं और यह मुझे लगता है कि खुद में काफी अच्छा है। हालांकि, अभिनेत्री ने सिनेमाघरों में फिल्म देखने के एक्सपीरियंस की खूब सराहना की है और कहा है कि उन्हें आज भी थिएटर जाकर फिल्में देखने में काफी मजा आता है। प्रियंका ने कहा, मुझे लगता है कि थिएटर में जाकर फिल्म देखना मेरे लिए हमेशा खास रहेगा। अंधेरे थिएटर में फिल्म देखने जैसा कुछ नहीं है, न केवल दोस्तों और परिवार के साथ, बल्कि अजनबियों से भरे कमरे में, सभी देखने के अनुभव से जुड़े हुए हैं।

थिएटर में फिल्में देखना पसंद करती हैं अभिनेत्री

प्रियंका ने आगे कहा, बड़ी स्क्रीन का, तेज साउंड इसे लोगों के लिए और अच्छा बना देते हैं। वहां बैठकर ऐसा लगता है कि सच में यह सारे सीन्स हमारे बीच ही हो रहे हैं। मुझे नहीं लगता कि मूवी थिएटर का जादू कभी फीका पड़ेगा।

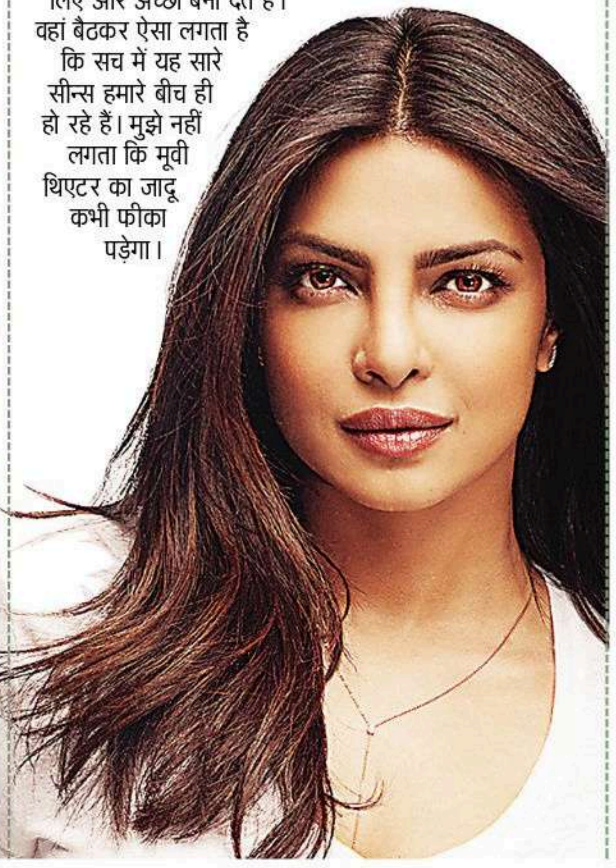

हिंदी फिल्म निर्माताओं ने ही नहीं रखा अपने दर्शकों का ध्यान

फिल्म निर्माता अनुराग कश्यप ने भारतीय फिल्म निर्माताओं को लेकर अपनी बात रखी है। उन्होंने कहा कि बॉलीवुड ने सामूहिक रूप से अपने मूल दर्शकों को इग्नोर किया है। उन्होंने अपनी खुद की प्रतिष्ठित फिल्मों, गैंग्स ऑफ वासेपुर और मुक्केबाज का उदाहरण दिया, जो उनके अनुसार, प्रोडक्शन स्टूडियो के गलत फैसले के कारण उत्तर भारत में कभी भी ठीक से रिलीज नहीं हुईं। अनुराग कश्यप ने कही ये बात हॉलीवुड रिपोर्टर इंडिया से बात करते हुए, अनुराग ने कहा, हमारे दर्शकों को सामूहिक रूप से नजरअंदाज किया गया। उदाहरण के लिए, कोविड के दौरान, मुझे पता चला कि मेरी दो फिल्में - गैंग्स ऑफ वासेपुर और मुक्केबाज, जिनके अब उत्तर भारत में बहुत ही मुख्य दर्शक हैं, उत्तर भारत में रिलीज नहीं हुईं। मुझे एक वितरण बैठक के दौरान पता चला कि मेरी उत्तर भारतीय फिल्में पूरे उत्तर भारत में रिलीज नहीं हुईं क्योंकि स्टूडियो ने तय किया कि मेरे मुख्य दर्शक दिल्ली, मुंबई, चंडीगढ़ और हैदराबाद में हैं और बस। वे कितने मूर्ख हैं।

अनुराग कश्यप ने साझा की बात उन्होंने कहा, रामोजी ने कहा कि साउथ फिल्मों से दर्शक इसलिए भी कनेक्ट करते हैं, क्योंकि वहां की फिल्में रूट्स से जुड़ी होती हैं। ऐसा ही कुछ मलयालम में भी होते हैं। वे ऐसा ही करके सिनेमा को चला रहे हैं। जैसी फिल्में साउथ में बनती हैं, वैसी हिंदी में बनेगी तो वहां बजट बनता है। अगर यहां प्रमोशन के लिए बजट दिया जाए तो सब आगे आएंगे। ओटीटी को लेकर कही ये बात अनुराग कश्यप ने कहा कि लोग ओटीटी पर आए हैं लेकिन ये लोग टीवी से ओटीटी पर आए हैं। लोगों को सिनेमा की समझ नहीं है। ओटीटी के लोग कह सकते हैं कि फिल्म सिनेमाघरों पर आई, हमने उसे ओटीटी पर देखा।

लॉन्ग टाइम गर्लफ्रेंड आशना श्रॉफ संग शादी के बंधन में बंधे अरमान मलिक

प्लेबैक सिंगर अरमान मलिक ने 2 जनवरी को अपनी लॉन्गटाइम गर्लफ्रेंड आशना श्रॉफ से शादी कर ली। सिंगर ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर अपने वेडिंग डे की कई तस्वीरें शेयर करके मशहूर सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर से अपनी शादी की खुशखबरी की घोषणा की। फैंस सिंगर को ढेर सारी शुभकामनाएं दे रहे हैं। सिंगर की वेडिंग फोटोज भी सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही है।

पत्नी आशना मलिक को बताया घर

अरमान ने साल की शुरुआत में ही अपने फैंस को सरप्राइज कर दिया है। हाल ही में, उन्होंने शादी की तस्वीरें साझा करते हुए लिखा, तू ही मेरा घर। बेबी पिंक ड्रेस में अरमान मलिक काफी डैशिंग लग रहे हैं। वहीं, लाल जोड़े में आशना दुल्हन बन काफी सुंदर लग रही हैं। प्रशंसक भी अरमान मलिक को ढेर सारी शुभकामनाएं दे रहे हैं।

तस्वीरों पर प्रशंसकों ने दिया ये रिएक्शन

एक यूजर ने लिखा, ये क्या तरीका है सरप्राइज देने का। दूसरे यूजर ने लिखा, आज का दिन तो हमारे लिए ही बड़ा बन गया है। दोनों को खूब शुभकामनाएं। बेहद प्यारी तस्वीरें हैं। एक और यूजर ने लिखा, अरमान ने शादी की तस्वीरें इतनी अचानक से दिखाई है कि मुझे तो अभी तक विश्वास नहीं हो रहा है कि दोनों की शादी हो गई है।

इन गानों के लिए फेमस हैं सिंगर

अरमान मलिक ने अगस्त 2023 में आशना श्रॉफ को प्रपोज किया था। बाद में, उन्होंने अपनी गर्लफ्रेंड के लिए कसम से - द प्रपोजल नाम से एक म्यूजिक वीडियो भी जारी किया था। लगभग दो महीने बाद, इस कपल ने आधिकारिक रूप से सगाई भी कर ली थी, जिसकी तस्वीरें भी उन्होंने अपने फैंस के साथ साझा की थी।

क्या करती हैं आशना श्रॉफ?

गायक अरमान मलिक वजह तुम हो, बोल दो ना जरा और बुट्टा बोम्मा जैसे गानों के लिए लोकप्रिय हैं ।अरमान ने इससे पहले ब्रिटिश गायक एड शीरन के गाने 2स्टेप के नए वर्जन पर उनके साथ मिलकर काम किया था। वहीं, बात करें आशना श्रॉफ की तो आशना श्रॉफ एक फैशन और ब्यूटी ब्लॉगर और यूट्यूबर हैं। उन्हें कॉस्मोपॉलिटन लग्जरी फैशन इन्फ्लुएंसर ऑफ द ईयर 2023 नामित किया गया था।

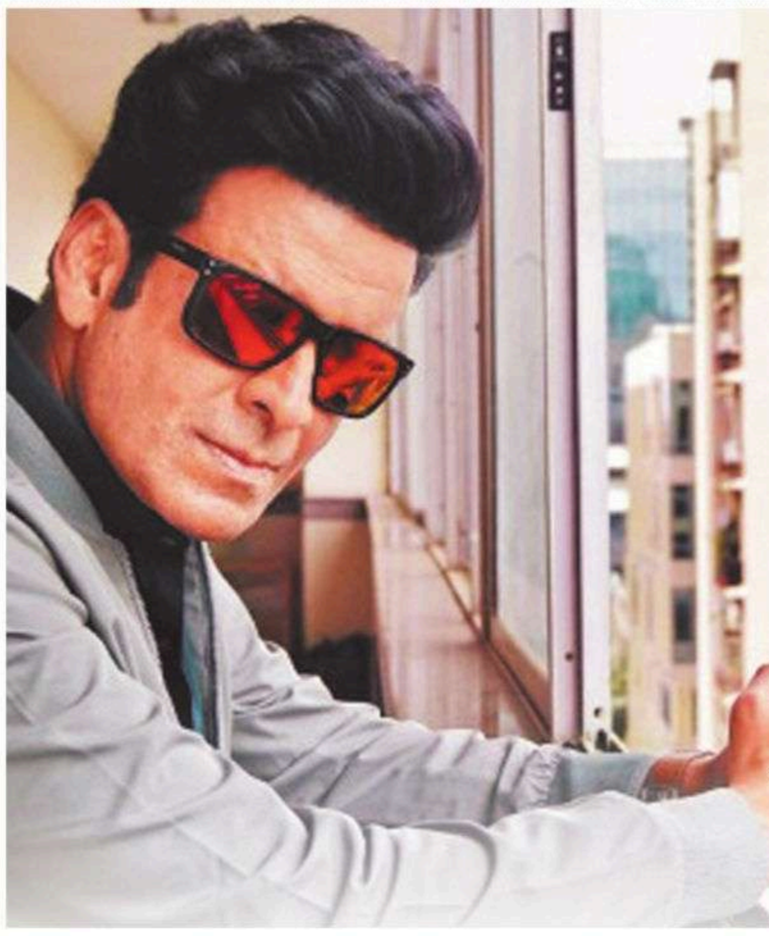

भगवान ना करे कभी सीक्वल में काम करना पड़े

एक्टर मनोज बाजपेयी इन दिनों डिस्पैच फिल्म के कारण चर्चा में हैं। उन्होंने खुलासा किया कि भले ही सीक्वल का दौर चल रहा है, लेकिन वो ये नहीं करना चाहते हैं। उन्हें नई कहानियां, नए किरदार करना पसंद हैं। अभिनय की खान कहे जाने वाले ऐक्टर मनोज बाजपेयी हाल ही में फिल्म डिस्पैच में नजर आए।

आपके लिए ये साल काफी अच्छा रहा है। आगे आने वाले समय में हम आपको किस तरह की चीजों में देखेंगे?

कोशिश तो ये ही रहती है कि नया काम करें, नए तरीके का अनुभव लें। चाहे किसी भी जोनर की फिल्म रही हो, ना कभी दर्शकों को मैंने कम आंका है ना ही खुद को। तो आगे के फैसले इस बात को ध्यान में रखकर लिए जाते हैं कि बतौर ऐक्टर मुझे एक नया एक्सपीरियंस हो। ये एक लत है। कभी-कभी लगता है कि कुछ दिन के लिए छोड़ देता हूं, जब थकान होती है। वो थकान इसलिए होती है क्योंकि आपने उस फिल्म को कितना कुछ दिया होता है। लेकिन प्रमोशन का समय भी एक ब्रेक ही है, जब आप कुछ सोचते हैं और पत्रकारों के जवाब देते हैं। साथ-साथ कोशिश रहती है कि सब सवालों के जवाबों से संतुष्ट किया जा सके। मेरे लिए दो फिल्म के बीच का जो अंतराल होता है वो मेरे लिए बड़ा मजेदार होता है। तब मैं सोच रहा होता कि कैसे कनु बहल को तंग किया जाए, अर्चिता को ऐसा क्या बोलूं कि ये और भी हिल जाए।

आपको लोगों से बहुत प्यार मिला है। लेकिन आपने ब्रेक के बारे में कभी गंभीरता से भी सोचा है?

मैं बिना किसी को बताए ब्रेक ले लेता हूं। कभी गांव चला जाता हूं, तो कभी पांच दिन के लिए मेडिटेशन के लिए चला जाता हूं। कभी पहाड़ पर चला जाता हूं और जाकर आ भी जाता हूं। जैसे कभी कनु कहता है कि कहां हो, तो मैं बोल देता हूं कि अल्मोड़ा में हूं और इतने दिन में आऊंगा। लेकिन जब मैं वहां होता हूं और जिस काम के लिए जाता हूं वो पूरी तन्मयता से करता हूं। मेडिटेशन कर रहा होता हूं या कोई फूड फेस्टिवल चल रहा होता है तो वहां चला जाता हूं, कोई नाटक चल रहा होता है तो वहां जाता हूं। मुझे लोगों से मिलना, वहां की संस्कृति को जानना, अध्यात्म को जानना या अपने गांव में जाने वाला ब्रेक लेना पसंद है।

आजकल सीक्वल का दौर है। अगर आपको अपनी किसी फिल्म का सीक्वल पर काम करना हो तो किस फिल्म का करेंगे?

(हाथ जोड़ते हुए) भगवान ना करे ! हो गया सर? ये सीक्वल के चक्कर में नहीं पड़ना। मुझे नई कहानियां कहने में, कहानियों में काम करने में, नए तरीके के चरित्र करने में मजा आता है। एक फैमिली मैन है, जिसके लिए हम कमीटेड हैं, चार सीजन के लिए। फैमिली मैन में जाने का इसलिए मन करता क्योंकि एक किरदार उसमें एक अलग स्टेज पर पहुंच चुका होता है। उस अलग स्टेज और उम्र में जाने के बाद वह क्या कुछ सोच रहा होता है, क्या कुछ कर रहा होता है, तो वो करने में मजा आता है। फिल्मों में सीक्वल का है कि बनाना ही बनाना है, मैं उससे परहेज करता हूं।

हाल ही में आपकी फिल्म डिस्पैच आई है। इसमें काम करने का अनुभव आपका कैसा रहा है?

काफी मजेदार अनुभव रहा। ये काफी कठिन फिल्म है। फिल्म एक पत्रकार के निजी जीवन और व्यावसायिक जीवन की चुनौतियों को सामने लाती है। कनु बहल एक खास तरह के डायरेक्टर हैं। उनके काम का तरीका अलग है। फिल्म को बनाने में एक नई तरह की कोशिश, नए तरीके का काम किया है। इसमें अभिनय चाहे जितना भी करने में कठिनाई रही हो, लेकिन एक साथ काम करने की जो यादें बनी हैं वो बहुत कीमती हैं।

स्वामी मुद्रक, प्रकाशक सम्पादक कृष्णा टेकड़ीवाल द्वारा डिजिटल अखबार कंकड़बाग पटना से प्रकाशित। समाचार पत्र में किसी भी समाचार व लेख-आलेख पर सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी वाद-विवाद के लिए न्याय क्षेत्र पटना ही रहेगा। मोबाइल- 9801716267